कला समीक्षा पटल की आवश्यकता

कुशाग्र जैन*

कला समीक्षा पटल (Art Critique Platform) की आवश्यकता आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण हो गई है, खासकर समकालीन कला और कला के विविध रूपों के संदर्भ में। कला की समीक्षा न केवल कलाकारों के काम का मूल्यांकन करने का एक तरीका है, बल्कि यह कला और संस्कृति के संवाद को भी प्रोत्साहित करती है। एक सक्षम और समर्पित कला समीक्षा पटल या प्लेटफ़ॉर्म, कला की व्यापक समझ, समाज में उसकी भूमिका, और कलाकारों के काम की सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव को बेहतर तरीके से प्रस्तुत करने में मदद करता है।

आइए समझते हैं कि कला समीक्षा पटल की आवश्यकता क्यों है:

1. कलाकारों के काम का सही मूल्यांकन

कला एक अत्यधिक व्यक्तिगत और व्यक्तिवादी अभिव्यक्ति है। कलाकार अपनी कला के माध्यम से अपनी सोच, विचार, और समाज के प्रति अपनी प्रतिक्रिया को व्यक्त करता है। एक उचित कला समीक्षा पटल कलाकारों के काम का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने का एक मंच प्रदान करता है, जहाँ उनकी कला को विश्लेषित किया जाता है, न केवल उसकी तकनीकी गुणवत्ता के संदर्भ में बल्कि उसकी सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक प्रासंगिकता के हिसाब से भी।

- विकास और प्रेरणा: समीक्षा से कलाकारों को अपने काम पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रतिक्रियाएँ मिलती हैं, जो उन्हें अपनी कला में सुधार करने, नए विचारों और दृष्टिकोणों को अपनाने और रचनात्मकता में वृद्धि करने के लिए प्रेरित करती हैं।

2. समाज में कला के महत्व को समझना

कला समाज का दर्पण होती है और समाज के विभिन्न पहलुओं, जैसे संस्कृति, राजनीति, धर्म, और अर्थव्यवस्था, को प्रकट करने का माध्यम बनती है। कला समीक्षा पटल समाज के लिए कला के महत्व को स्पष्ट करने में मदद करता है। यह दर्शकों को कला के विभिन्न रूपों की गहरी समझ और उसकी सामाजिक भूमिका के बारे में सोचने का अवसर देता है।

- समाज में संवाद: समीक्षा पटल के माध्यम से कला को सिर्फ सौंदर्य की दृष्टि से नहीं, बल्कि समाजिक परिवर्तन, चेतना, और सांस्कृतिक मुद्दों के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। यह दर्शकों को कला और समाज के बीच संबंध को समझने में मदद करता है।

3. कलात्मक प्रवृत्तियों और नई शैलियों की पहचान

समकालीन कला में लगातार नये प्रयोग और शैलियाँ विकसित हो रही हैं। कला समीक्षा पटल नए रुझानों, शैलियों, और कला रूपों की पहचान करने और उन्हें सार्वजनिक करने का एक मंच प्रदान करता है। जब कला के विभिन्न रूपों और शैलियों का मूल्यांकन किया जाता है, तो यह कला के विकास के संदर्भ में एक व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत करता है।

- नई शैलियों और प्रवृत्तियों का समर्थन: कला समीक्षाएँ कलाकारों को अपने प्रयोगों और नवाचारों को समाज के सामने लाने के लिए प्रेरित करती हैं। यह नई शैलियों और दृष्टिकोणों को स्वीकार करने का एक माध्यम बन सकता है, जिससे कला की सीमाएँ विस्तारित होती हैं।

4. कलाकारों और दर्शकों के बीच एक पुल का निर्माण

कला समीक्षा पटल कलाकारों और दर्शकों के बीच एक संवाद स्थापित करता है। जब कला समीक्षाएँ प्रकाशित होती हैं, तो वे दर्शकों को कलाकारों के काम को एक नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर देती हैं। यह कला के प्रति जागरूकता और समझ को बढ़ाता है, और दर्शकों के लिए अधिक गहरे अनुभव की संभावना पैदा करता है।

- दर्शक की भागीदारी: जब कला समीक्षाएँ किसी कला रूप, प्रदर्शनी या कला प्रदर्शन पर प्रकाशित होती हैं, तो यह दर्शकों के लिए कला को समझने का एक नया तरीका प्रदान करती है। यह एक पारस्परिक संवाद को जन्म देती है, जिससे कला के प्रति उनकी रुचि और समझ में वृद्धि होती है।

5. कला के पारंपरिक और समकालीन रूपों के बीच संतुलन

कला समीक्षा पटल पारंपरिक और समकालीन कला के बीच संतुलन बनाने में मदद कर सकता है। पारंपरिक कला रूपों जैसे चित्रकला, मूर्तिकला आदि की समीक्षाएँ और समकालीन कला की विविध शैलियाँ, जैसे डिजिटल कला, इंस्टॉलेशन आर्ट, और प्रदर्शन कला, की समीक्षा की जाती है। यह कला के विभिन्न रूपों के बीच संवाद उत्पन्न करता है और दर्शकों को विविधता की पहचान करने का अवसर देता है।

- पारंपरिक और समकालीन का समन्वय: कला समीक्षा प्लेटफार्म पर पारंपरिक और समकालीन कला रूपों की तुलना की जा सकती है, और दोनों के बीच के अंतर और समानताएँ को समझा जा सकता है। यह कला की समग्रता को देखने का एक तरीका बनता है।

6. आर्थिक और बाज़ार के परिप्रेक्ष्य में समीक्षा

कला एक बाजार भी बन चुकी है, जिसमें मूल्य निर्धारण, संग्रहण और व्यापार पर बहस हो रही है। एक सक्षम कला समीक्षा पटल कलाकारों के काम के व्यावसायिक पहलुओं पर भी चर्चा करता है, जैसे कि कला की कीमत, नीलामी, कला मेला आदि। यह कला बाजार को और अधिक पारदर्शी बनाने में मदद करता है और दर्शकों को कला की असली क़ीमत और उसके मूल्य को समझने का अवसर देता है।

- कला बाजार की समझ: समीक्षाएँ कला बाजार के आर्थिक पहलुओं को समझने में मदद करती हैं, जिससे कला के कलेक्टर और व्यापारी बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

7. कला और संस्कृति पर संवाद बढ़ाना

कला हमेशा समाज में एक बड़ा बदलाव लाने की क्षमता रखती है। समीक्षा पटल इस संदर्भ में कला और संस्कृति के बीच संवाद को बढ़ावा देता है। यह कलाकारों, समीक्षकों, क्यूरेटर, और दर्शकों को एक मंच पर लाता है, जहां वे कला की भूमिका, सामाजिक बदलावों, और सांस्कृतिक मुद्दों पर विचार-विमर्श कर सकते हैं।

- संवाद और बहस: समीक्षा पटल कला पर एक स्वस्थ संवाद उत्पन्न करता है, जहां लोग कला के विभिन्न पहलुओं पर विचार और बहस कर सकते हैं। इससे कला के बारे में व्यापक समझ और विचारशील दृष्टिकोण को बढ़ावा मिलता है।

कला समीक्षा पटल की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि यह न केवल कलाकारों के काम का विश्लेषण और मूल्यांकन करने का एक मंच है, बल्कि यह कला के प्रति जागरूकता और समझ को भी बढ़ाता है। यह कला के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक संदर्भ को समझने में मदद करता है और कला के महत्व को समाज में प्रकट करता है। एक अच्छा कला समीक्षा पटल समकालीन कला के विकास में सहायक होता है, कलाकारों को प्रेरित करता है, और दर्शकों के लिए कला को एक नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्रदान करता है।

कला के चार आयाम

कुशाग्र जैन*

कला के चार आयाम का विचार कला के विविध पहलुओं को समझने में मदद करता है। ये आयाम कला के अनुभव और मूल्यांकन के विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करते हैं और प्रत्येक आयाम कला के उद्देश्य, उसकी संरचना, और उसके सामाजिक-सांस्कृतिक प्रभाव को समझने में सहायक होते हैं। आइए, इन चार आयामों का विस्तार से अध्ययन करें:

1. सौंदर्यात्मक आयाम (Aesthetic Dimension)

यह आयाम कला के सौंदर्य और रूप से संबंधित है, जिसमें कलाकार अपनी रचनाओं में रंग, रूप, रेखा, संरचना और अन्य दृश्य तत्वों का उपयोग करता है। सौंदर्यात्मक आयाम का उद्देश्य दर्शकों को एक गहरी दृश्य और अनुभवात्मक संतुष्टि प्रदान करना है। कला के इस आयाम के तहत हम यह समझते हैं कि कला का उद्देश्य केवल दृश्य सौंदर्य प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि वह दर्शकों को एक अद्वितीय और भावनात्मक अनुभव देने की कोशिश करती है।

- रूप और रंग: कला में रूप, आकार, रंग और रेखाओं का प्रयोग सौंदर्यात्मक आकर्षण को उत्पन्न करता है।
- अवधारणाएँ और भावना: यह आयाम कला के भावनात्मक प्रभाव को समझने में मदद करता है, जैसे किसी दृश्य से उत्तेजना, शांति, या निराशा का अनुभव।

उदाहरण:

- लियोनार्डो दा विंची की "मोना लिसा" में रंग और रूपों का संयोजन एक सौंदर्यात्मक अनुभव उत्पन्न करता है जो दर्शक को कला में गहरी सोच में डालता है।
- विन्सेंट वैन गॉग की "स्टारी नाइट" में रंगों और रेखाओं के द्वारा एक मानसिक और भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न किया जाता है।

2. सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम (Social and Cultural Dimension)

कला का दूसरा आयाम उसकी सामाजिक और सांस्कृतिक भूमिका से संबंधित है। कला समाज के विभिन्न पहलुओं को व्यक्त करती है, जैसे कि उसकी सामाजिक संरचनाएँ, परंपराएँ, राजनीति, और सांस्कृतिक धारा। कला का यह आयाम समाज को एक दर्पण के रूप में कार्य करता है, जहां वह समाज की अच्छाई और बुराई, संघर्ष, और बदलाव को दर्शाता है।

- सामाजिक मुद्दे: कला सामाजिक मुद्दों को उजागर करने का एक सशक्त माध्यम बन सकती है, जैसे कि गरीबी, असमानता, युद्ध, और मानवाधिकार।
- सांस्कृतिक पहचान: कला समुदाय की सांस्कृतिक धरोहर, परंपराओं और मूल्यों को प्रदर्शित करती है, जिससे संस्कृति और पहचान की समझ बढ़ती है।

उदाहरण:

- पाब्लो पिकासो की "गुएर्निका" युद्ध और हिंसा के विरोध में एक शक्तिशाली बयान है, जो युद्ध के भयावह प्रभावों को दर्शाता है।

- मधुबनी कला (भारत) में सांस्कृतिक परंपराओं, धार्मिक कथाओं और लोककला का समावेश होता है, जो भारतीय ग्रामीण संस्कृति को प्रस्तुत करती है।

3. बौद्धिक आयाम (Intellectual Dimension)

कला का बौद्धिक आयाम उसकी विचारधाराओं, संदेशों, और अंतर्निहित तर्कों से संबंधित है। इसमें कला को एक संज्ञानात्मक दृष्टिकोण से देखा जाता है, जहाँ दर्शक या समीक्षक कला के काम को केवल रूप और रंग के दृष्टिकोण से नहीं, बल्कि उसके पीछे छिपे विचारों और दृष्टिकोणों को समझने की कोशिश करते हैं।

- विचार और दृष्टिकोण: कला के इस आयाम में कलाकार समाज, जीवन, अस्तित्व, और मानवता के बारे में अपने विचारों को व्यक्त करता है। यह दर्शक को गहरे विचार और संवाद में शामिल होने के लिए प्रेरित करता है।
- संरचना और रूप: कला की बौद्धिकता में उसकी संरचना, तकनीक, और शैली की समझ शामिल होती है, जो किसी विषय को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत करती है।

उदाहरण:

- मार्क रोथको की "कलरफील्ड पेंटिंग्स" कला के बौद्धिक आयाम का उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जहां रंग और रूप का संयोजन दर्शकों को आंतरिक भावनाओं और अस्तित्व के सवालों पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है।
- मैटिस की "दांस" चित्रकला में बौद्धिकता का मिश्रण देखा जा सकता है, जहाँ संरचनाओं और गतियों के माध्यम से जीवन के उन्नति और विकास की अवधारणा को व्यक्त किया गया है।

4. भावनात्मक आयाम (Emotional Dimension)

कला का भावनात्मक आयाम उसकी क्षमता से संबंधित है, जिससे वह दर्शकों को एक भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करती है। यह आयाम कला की सबसे गहरी और व्यक्तिगत विशेषता है, क्योंकि कला अक्सर दर्शकों के भीतर गहरे भावनात्मक अनुभव को जागृत करती है। यह आयाम दर्शक की आंतरिक दुनिया के साथ जुड़ता है, और कला का उद्देश्य केवल सौंदर्य को नहीं, बल्कि भावनाओं को भी जागृत करना है।

- भावनाओं की अभिव्यक्ति: कला प्रेम, दुःख, खुशी, डर, चिंता, घृणा, और अन्य भावनाओं को व्यक्त करती है, जो एक दर्शक को अपनी व्यक्तिगत भावनाओं के साथ जोड़ती है।
- भावनात्मक प्रतिक्रिया: कला दर्शकों को न केवल दृश्य रूप से आकर्षित करती है, बल्कि उनके मन और आत्मा को भी प्रभावित करती है, जिससे वे कला को अधिक गहरे स्तर पर अनुभव करते हैं।

उदाहरण:

- एडवर्ड मुंच की "द स्क्रीम" (1893) कला के भावनात्मक आयाम का आदर्श उदाहरण है, जहाँ भय, मानसिक तनाव और अकेलेपन की भावनाएँ दर्शाई गई हैं।
- फ्रिदा काहलो की चित्रकला, जैसे "द टू ब्रोकन कॉलम", में व्यक्तिगत दर्द और शारीरिक और मानसिक संघर्ष की भावनाएँ व्यक्त की जाती हैं, जो दर्शक को गहरे भावनात्मक स्तर पर प्रभावित करती हैं।

कला के ये चार आयाम (सौंदर्यात्मक, सामाजिक और सांस्कृतिक, बौद्धिक, और भावनात्मक) कला के बहुआयामी स्वरूप को समझने में मदद करते हैं। हर कला कार्य इन आयामों के एक संयोजन के रूप में

सामने आता है और कलाकार की रचनात्मकता, समाज की प्रतिक्रियाएँ, दर्शकों की भावनाएँ और विचारधाराएँ एक साथ मिलकर कला के अनुभव को समृद्ध बनाती हैं। इन चार आयामों को समझकर हम कला को न केवल एक दृश्य या औपचारिक तत्व के रूप में, बल्कि एक गहरे और बहु-आयामी अनुभव के रूप में देख सकते हैं।

कला लेखन में अवसर

कुशाग्र जैन*

कला लेखन (Art Writing) एक समृद्ध और बहुआयामी क्षेत्र है, जो कला, संस्कृति और समाज के बीच पुल का काम करता है। कला के प्रति रुचि रखने वाले व्यक्तियों के लिए यह एक महत्वपूर्ण अवसर प्रस्तुत करता है, क्योंकि कला लेखन न केवल कलाकारों और उनकी कृतियों के बारे में विचार व्यक्त करने का एक मंच प्रदान करता है, बल्कि यह कला के महत्व को समाज में स्पष्ट करने का भी एक साधन है।

कला लेखन में अवसरों की विभिन्न श्रेणियाँ

1. कला आलोचना और समीक्षा (Art Criticism and Reviews)

कला आलोचना और समीक्षा, कला लेखन का सबसे प्रमुख रूप है। इसमें कलाकारों की कृतियों का विश्लेषण किया जाता है, उनके विषय, रूप, शैली, तकनीक और भावनात्मक/सामाजिक संदर्भों को समझने की कोशिश की जाती है।

- अवसर: कला आलोचक या समीक्षक के रूप में विभिन्न कला गैलरियों, संग्रहालयों, कला प्रदर्शनों, और कला मेलों में अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलता है। इसके अलावा, कला पत्रिकाओं, ब्लॉग्स और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्म पर भी लेखन करने के अवसर उपलब्ध होते हैं।
- विकास: इस क्षेत्र में लेखन की अच्छी समझ और निरंतर अभ्यास से आलोचक खुद को एक प्रतिष्ठित नाम बना सकते हैं, जो कलाकारों और कला प्रेमियों के लिए मार्गदर्शन का काम करेगा।

2. कला पत्रकारिता (Art Journalism)

कला पत्रकारिता में कला से संबंधित घटनाओं, प्रदर्शनों, और शैलियों पर रिपोर्टिंग और समाचार लेखन शामिल होता है। इसमें कला की दुनिया से जुड़ी नई घटनाएँ, विचारधाराएँ और कलाकारों के बारे में लेख और समाचार तैयार करना होता है।

- अवसर: कला पत्रिकाओं, समाचार पत्रों, और ऑनलाइन प्लेटफ़ॉर्मों पर कला पत्रकारिता के लिए लेखन के अवसर उपलब्ध हैं। इसमें कला की दुनिया के ट्रेंड्स और घटनाओं की जानकारी प्रदान करना और कलाकारों के कार्यों को जनता के सामने लाना शामिल है।
- विकास: कला पत्रकारिता से लेखकों को प्रसिद्धि, सम्मान और अनुयायी मिल सकते हैं, और वे कला की समकालीन बहस में अपनी आवाज उठा सकते हैं।

3. कला इतिहास लेखन (Art History Writing)

कला इतिहास लेखन में ऐतिहासिक संदर्भ में कला की उत्पत्ति, विकास और प्रभाव पर अध्ययन किया जाता है। इसमें विभिन्न कालखंडों, संस्कृतियों और कला आंदोलनों पर शोध किया जाता है।

- अवसर: कला इतिहास के विशेषज्ञ और लेखक कई प्रकार के शोधपत्र, पुस्तकों, और दस्तावेज़ों के रूप में लेखन कर सकते हैं। इसके अलावा, विश्वविद्यालयों और शोध संस्थानों में भी इसके लिए अवसर हैं।
- विकास: कला इतिहास में लेखन से लेखक अपनी विशेषज्ञता स्थापित कर सकते हैं, और विभिन्न शोध पत्रिकाओं, पत्रिकाओं या संग्रहालयों में प्रकाशित हो सकते हैं। यह अवसर कला की व्यापक समझ और

इतिहास को संरक्षित करने का एक तरीका बनता है।

4. कला ब्लॉग और ऑनलाइन लेखन (Art Blogs and Online Writing)

डिजिटल युग में, कला ब्लॉग और ऑनलाइन लेखन एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन गया है। इसमें व्यक्तिगत या सामूहिक ब्लॉग्स, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और ऑनलाइन आर्ट पत्रिकाओं में लेखन शामिल है।

- अवसर: कला से संबंधित व्यक्तिगत विचार, समीक्षा, कलाकारों के साक्षात्कार, और कला की दुनिया से संबंधित नवीनतम घटनाओं पर ब्लॉग या आर्टिकल लिखने के अवसर। कलाकारों, कला गैलरीज़ और कला प्रेमियों के लिए एक डिजिटल मंच पर अपनी विचारधारा साझा करने का यह एक बेहतरीन अवसर है।
- विकास: ऑनलाइन लेखन से लेखक को वैश्विक स्तर पर पहचान मिल सकती है। इस क्षेत्र में अच्छा कंटेंट, आकर्षक लेखन शैली, और लगातार अपडेट्स से एक लेखक अपने आपको एक प्रभावशाली आवाज बना सकता है।

5. कला क्यूरेटर और गैलरी लेखन (Curatorial and Gallery Writing)

कला क्यूरेटर, कला गैलरी और संग्रहालयों में कला प्रदर्शनों का आयोजन करते हैं और इसके बारे में लिखते हैं। क्यूरेटर कला प्रदर्शनों के लिए थीम, क्यूरेशन और सांस्कृतिक संदर्भ तैयार करते हैं, और इस पर लेखन करते हैं।

- अवसर: क्यूरेटर के रूप में गैलरी, संग्रहालय, और कला संस्थानों में काम करने का अवसर, जहां क्यूरेटर प्रदर्शनों के बारे में समीक्षा, कैटलॉग, और अन्य संदर्भ दस्तावेज़ों का निर्माण करते हैं।
- विकास: कला क्यूरेटर और गैलरी लेखक, कला की गहरी समझ और विवेकपूर्ण दृष्टिकोण के साथ एक बड़े दर्शक वर्ग तक अपनी पहुँच बना सकते हैं और संग्रहालयों और गैलरी में स्थायी योगदान कर सकते हैं।

6. कला पुस्तक लेखन (Art Book Writing)

कला पुस्तक लेखन में कला के विभिन्न पहलुओं, कलाकारों की जीवनी, कला आंदोलनों, और कला इतिहास पर विस्तृत रूप से लिखा जाता है। इसके अंतर्गत कला के दृष्टिकोण और दृष्टिकोण को साहित्यिक रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

- अवसर: कला की कहानियों, कलाकारों की जीवनी, या कला आंदोलनों पर पुस्तक लेखन के अवसर होते हैं। इन पुस्तकों को पुस्तकालयों, कला गैलरीज़, और शिक्षा संस्थानों में प्रकाशित और वितरित किया जाता है।
- विकास: लेखक अपनी कला पुस्तकें प्रकाशित कर सकते हैं, जो कला के क्षेत्र में गहरी समझ प्रदान करें। यह लेखकों को विद्वानों, कला प्रेमियों, और शैक्षिक संस्थानों के बीच एक विशिष्ट स्थान दिला सकता है।

7. कला के प्रचार और विपणन (Art Promotion and Marketing)

कला के प्रचार और विपणन के क्षेत्र में लेखन का महत्व बढ़ा है। कला को सही तरीके से प्रस्तुत करने, उसके मूल्य को पहचानने, और उसे सही तरीके से विपणित करने के लिए प्रभावी लेखन आवश्यक होता है।

- अवसर: कला गैलरीज़, कला मेलों, और कला व्यवसायों के लिए विपणन सामग्री तैयार करना, सोशल मीडिया अभियानों के लिए कंटेंट लिखना, और कला के प्रचार के लिए लेखन करना।
- विकास: कला विपणन में लेखन करने से एक व्यक्ति कला उद्योग में अपनी पहचान बना सकता है और कला को विभिन्न प्लेटफ़ॉर्मों पर प्रस्तुत करने में मदद कर सकता है।

कला लेखन में अवसरों की कोई कमी नहीं है। यह क्षेत्र आलोचना, पत्रकारिता, इतिहास, प्रचार, क्यूरेशन से लेकर ऑनलाइन और डिजिटल प्लेटफार्मों तक फैला हुआ है। कला लेखन न केवल कला की दुनिया को समझने और उसे प्रस्तुत करने का एक तरीका है, बल्कि यह कला के विकास और उसकी सामाजिक भूमिका को भी आकार देता है। कलाकारों, आलोचकों, शोधकर्ताओं और कला प्रेमियों के लिए यह एक सशक्त और विविध अवसर प्रदान करता है, जिससे वे कला की दुनिया में अपनी एक विशिष्ट पहचान बना सकते हैं।

अलपेन्द्र सिंह झाला, शक्ति, भक्ति और रक्षण के प्रतीक: हनुमान व भैरव जी की शिल्प परंपरा और स्थापत्य में उपस्थिति,
कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 11-14*

शक्ति, भक्ति और रक्षण के प्रतीक: हनुमान व भैरव जी की शिल्प परंपरा और स्थापत्य में उपस्थिति

अलपेन्द्र सिंह झाला*

भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना में लोक देवताओं का विशेष महत्व रहा है। विशेषतः ग्रामीण, नगर, पर्वतीय और जनजातीय संस्कृतियों में कुछ देवताओं को लोकाचार और आत्मबल के प्रतीक के रूप में पूजा जाता है। हनुमान और भैरव ऐसे ही दो अत्यंत महत्वपूर्ण देवता हैं जो न केवल भक्ति और शक्ति के प्रतीक हैं, बल्कि लोक रक्षक और विघ्नविनाशक के रूप में भारतीय मानस में गहरे स्थापित हैं।

इनकी मूर्तियाँ केवल धार्मिक आस्था का केंद्र नहीं, बल्कि कला, वास्तुकला और मूर्तिशिल्प की दृष्टि से भी अद्वितीय उदाहरण हैं। मंदिर स्थापत्य, लोक स्थापत्य, नगरद्वार, ग्राम सीमा या श्मशान क्षेत्र–हर स्थान पर इनकी विशिष्ट प्रतिष्ठा होती है। यह लेख विशेष रूप से हनुमान और भैरव जी की शिल्पीय परंपरा, मूर्ति स्वरूपों और स्थापत्य में उनकी विशेष भूमिका का शास्त्रीय और सांस्कृतिक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

1. हनुमान जी की शिल्पीय छवियाँ: वीरता, भक्ति और समर्पण का संगम

1.1 प्रतीकात्मकता और मूलभूत स्वरूप

हनुमान जी को 'बजरंगबली', 'मारुति', 'अंजनीपुत्र', 'रामभक्त' और 'संकटमोचन' जैसे अनेक नामों से जाना जाता है। इनकी मूर्तियों में इन सभी गुणों का समावेश पाया जाता है। हनुमान जी की छवि में वीरता, बल, भक्ति और समर्पण का अनूठा संगम होता है।

- गदा हनुमान जी का प्रमुख आयुध है, जो उनकी युद्धशक्ति और रक्षक भाव का प्रतीक है।
- उड़न मुद्रा में बनी मूर्तियाँ उनकी गतिशीलता और दूत के रूप में पहचान दर्शाती हैं।
- रामनाम धारण रूप या वक्षस्थल फाड़कर श्रीराम-सीता का दर्शन कराते हुए मूर्तियाँ अत्यंत लोकप्रिय हैं, जो परम भक्ति का प्रतीक हैं।
- संकट मोचन स्वरूप में हनुमान राक्षसों का वध करते हुए या भक्तों की रक्षा करते हुए चित्रित होते हैं।

1.2 शिल्पीय विविधता

भारतभर में हनुमान जी की मूर्तियों में भिन्न-भिन्न रूप देखने को मिलते हैं। कुछ प्रमुख स्वरूप हैं:

- बालरूप हनुमान: छोटे आकार में, मासूमियत भरी मुद्रा में बैठे या खेलते हुए।
- ध्यानस्थ हनुमान: योग मुद्रा में बैठे, यह तांत्रिक परंपरा में पूजनीय हैं।
- वीर हनुमान: खड़े हुए, गदा लिए हुए, एक पैर भूमि पर और दूसरा हवा में।
- पंखधारी हनुमान: विशेषकर दक्षिण भारत में, गरुड़ जैसे पंखों के साथ उड़न मुद्रा में।

इन शिल्पों में हनुमान जी का शरीर बलिष्ठ, लंबी पूंछ, खुला हुआ मुँह, तीव्र नेत्र और ऊर्जावान मुद्रा में होता है।

अलपेन्द्र सिंह झाला, शक्ति, भक्ति और रक्षण के प्रतीक: हनुमान व भैरव जी की शिल्प परंपरा और स्थापत्य में उपस्थिति, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 11-14*

1.3 क्षेत्रीय भिन्नताएँ

- उत्तर भारत में लाल रंग से रंजित हनुमान जी की बड़ी मूर्तियाँ प्रचलित हैं, जैसे दिल्ली की झंडेवालान वाली मूर्ति।
- दक्षिण भारत में वे 'वीरमारुति' या 'अनुमन' के रूप में पूजित होते हैं और ब्रह्मचारी रूप में प्रतिष्ठित होते हैं।
- महाराष्ट्र और गोवा में हनुमान जी का "सिंदूरी रूप" अधिक प्रचलित है।

2. भैरव जी की शिल्पीय परंपरा: संहार, तंत्र और रक्षण का स्वरूप

2.1 भैरव का मूलस्वरूप

भैरव, भगवान शिव का उग्र और संहारक रूप हैं। संस्कृत में 'भैरव' का अर्थ है - भय को हरने वाला। इन्हें काल, मृत्यु, तंत्र और गूढ़ ज्ञान का अधिपति माना गया है। इनकी पूजा विशेष रूप से तांत्रिक परंपरा में की जाती है।

- काल भैरव, बटुक भैरव, स्वर्णाकर्षण भैरव, अन्नपूर्णेश भैरव आदि इनके विविध स्वरूप हैं।
- त्रिशूल, कपाल, गदा, डमरु, कृपाण जैसे आयुधों से युक्त होते हैं।
- काले रंग की त्वचा, उग्र नेत्र, खुले बाल और गर्दन में मुण्डमाला इनके शिल्प का प्रमुख अंग हैं।
- कुत्ता इनका वाहन है, जो अव्यक्त शक्तियों के नियंत्रण का प्रतीक है।

2.2 शिल्पीय विशेषताएँ

- भैरव जी की मूर्तियाँ सामान्यतः उग्र और विकराल होती हैं।
- आँखें बड़ी और रक्ताभ होती हैं।
- अर्धनग्न शरीर, भस्म लिप्त और तांत्रिक चिन्हों से युक्त होते हैं।
- कुछ मूर्तियाँ मुद्रा में होती हैं, जहाँ वे ध्यानस्थ दिखते हैं, विशेषतः बटुक भैरव रूप में।

2.3 तांत्रिक परंपरा में प्रतिष्ठा

भैरव जी की मूर्तियाँ अक्सर मंदिरों के श्मशान, अरण्य या सीमांत क्षेत्रों में स्थापित की जाती हैं। तांत्रिक साधक उन्हें 'रक्षक देव' के रूप में मानते हैं। काल भैरव को समय और मृत्यु का स्वामी माना गया है और इनकी उपासना से 'भय', 'रोग' और 'दुर्भाग्य' दूर होता है।

3. मंदिर स्थापत्य में मूर्ति स्थापना: स्थापत्य के नियम और प्रतीकवाद

3.1 हनुमान जी का स्थापत्य स्थान

हनुमान जी को सामान्यतः मंदिरों के प्रवेश द्वार के पास दक्षिण दिशा में स्थापित किया जाता है। इसके पीछे धार्मिक और वास्तुशास्त्रीय दोनों तर्क हैं:

- दक्षिण दिशा यम की मानी जाती है, और हनुमान जी को उस दिशा का रक्षक माना गया है।
- द्वारपाल रूप में वे भक्तों की रक्षा करते हैं और मंदिर के वातावरण को शुद्ध रखते हैं।

अलपेन्द्र सिंह झाला, शक्ति, भक्ति और रक्षण के प्रतीक: हनुमान व भैरव जी की शिल्प परंपरा और स्थापत्य में उपस्थिति, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 11-14*

- कई स्थानों पर उनकी विशाल प्रतिमाएँ राजमार्गों, नगरद्वारों और गाँवों की सीमा पर स्थापित की जाती हैं, जो विघ्नों को रोकने का प्रतीक मानी जाती हैं।

3.2 भैरव जी का स्थापत्य स्थान

भैरव जी को मंदिर परिसर की परिधि या परिक्रमा में स्थापित किया जाता है:

- विशेष रूप से श्मशान, अरण्य, नदी किनारे या मंदिर के पीछे स्थान पर।
- काल भैरव को शिव मंदिरों में द्वारपाल के रूप में भी प्रतिष्ठित किया जाता है, जैसे काशी विश्वनाथ मंदिर में।
- कई बार भैरव मंदिर, मुख्य देवालय की रक्षा हेतु स्थापित होते हैं।

3.3 स्थापत्य में दिशा, मुद्रा और शास्त्रीय नियम

मूर्ति स्थापना में वास्तुशास्त्र और आगम शास्त्र के अनुसार दिशा, आयुध, मुद्रा, वाहन आदि का विशेष महत्व होता है:

- दक्षिणमुखी हनुमान: भय नाशक और रक्षक रूप।
- पूर्वमुखी भैरव: तांत्रिक शक्ति का प्रवाह करने वाले।
- बैठी मुद्रा: स्थिरता और ध्यान का प्रतीक।
- खड़ी मुद्रा: सक्रियता और जागरूकता का प्रतीक।

4. ग्रामीण और नगरीय स्थापत्य परंपराएँ

4.1 ग्रामीण परिवेश

गांवों में हनुमान और भैरव की मूर्तियाँ मुख्यतः सीमांत क्षेत्रों, खेतों के पास, नदी किनारे या चौराहों पर पाई जाती हैं। ये वहाँ के ग्राम देवता और रक्षक होते हैं।

- ग्रामीण मूर्तियाँ सामान्यतः मिट्टी, काले पत्थर या सीमेंट से बनी होती हैं।
- इनमें शास्त्रीय सौंदर्य अपेक्षा कम होती है, परंतु शक्ति और श्रद्धा की प्रबल छवि होती है।

4.2 नगरीय स्थापत्य

शहरों में हनुमान और भैरव मंदिर स्थापत्य अधिक कलात्मक और नियमबद्ध होते हैं:

- मंदिरों में गोपुरम, शिखर, मंडप, प्रवेश द्वार आदि होते हैं।
- मूर्तियाँ प्रायः पंचधातु, संगमरमर, या ग्रेनाइट से निर्मित होती हैं।
- मूर्ति निर्माण में शिल्प शास्त्र के नियमों का पालन किया जाता है, जैसे अंशमान, प्राण प्रतिष्ठा, मुद्रा आदि।

5. सांस्कृतिक और शास्त्रीय महत्त्व

अलपेन्द्र सिंह झाला, शक्ति, भक्ति और रक्षण के प्रतीक: हनुमान व भैरव जी की शिल्प परंपरा और स्थापत्य में उपस्थिति, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 11-14*

हनुमान और भैरव, केवल पूजनीय देवता ही नहीं, बल्कि भारतीय समाज के रक्षक और प्रेरणास्रोत हैं। उनकी मूर्तियाँ केवल आस्था की प्रतिमाएँ नहीं, बल्कि एक धार्मिक-दर्शनिक संवाद का माध्यम भी हैं।

- हनुमान जी आत्मबल, सेवा और निष्ठा के प्रतीक हैं।
- भैरव जी साहस, संहार और रहस्य के प्रतीक हैं।
- दोनों ही देवताओं की मूर्तियाँ लोककला, मंदिर स्थापत्य, मूर्तिशिल्प और वास्तुशास्त्र की गहराइयों को प्रकट करती हैं।

निष्कर्ष

हनुमान और भैरव, भारतीय धार्मिक चेतना के दो महत्वपूर्ण स्तंभ हैं। उनकी मूर्तियाँ और मंदिरों में उनकी स्थापत्य परंपरा, भारत की सांस्कृतिक गहराई, तांत्रिक परंपरा, वास्तु और शिल्प कौशल की अद्भुत झलक प्रस्तुत करती हैं। आज भी इनकी पूजा, प्रतिष्ठा और मूर्ति शिल्प समाज में सुरक्षा, शक्ति और भक्ति की भावना को जीवित रखती है।

यह आलेख न केवल धार्मिक आस्था को उद्घाटित करता है, बल्कि भारतीय स्थापत्य, शिल्पशास्त्र और सांस्कृतिक विमर्श को भी समृद्ध करता है। हनुमान और भैरव, हमारी आत्मा के प्रहरी हैं–भक्ति और भयमुक्ति के स्थायी प्रतीक।

हेमलता तिवारी, बुंदेलखंडी मंदिरों में उपस्थित मूर्तिकला का प्रतिमा वैज्ञानिक पक्ष, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 15-17*

बुंदेलखंडी मंदिरों में उपस्थित मूर्तिकला का प्रतिमा वैज्ञानिक पक्ष

हेमलता तिवारी*

प्रस्तावना (Introduction)

भारत की सांस्कृतिक और धार्मिक चेतना का एक बड़ा हिस्सा उसके प्राचीन मंदिरों और उनमें प्रतिष्ठित मूर्तियों में समाहित है। बुंदेलखंड–a ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और भूगोलिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध क्षेत्र–अपने स्थापत्य, किलों, मंदिरों और मूर्तिकला के लिए प्रसिद्ध है।

बुंदेलखंड के मंदिरों में पाई जाने वाली मूर्तियाँ केवल पूजन की प्रतीक नहीं, बल्कि वे प्राचीन भारत की धार्मिक, सामाजिक, राजनीतिक और शिल्पीय चेतना की मूर्त अभिव्यक्ति हैं। इस शोध में हम बुंदेलखंडी मंदिरों में विद्यमान मूर्तियों का प्रतिमा विज्ञान (Iconography) की दृष्टि से अध्ययन करेंगे, जिसमें मूर्ति निर्माण की शास्त्रीय विधियाँ, प्रतीकात्मकता, विविधता, क्षेत्रीय विशेषताएँ और उनके धार्मिक अर्थ की विवेचना की जाएगी।

2. शोध की उद्देश्य

1. बुंदेलखंड क्षेत्र के प्रमुख मंदिरों की मूर्तियों का प्रतिमा वैज्ञानिक अध्ययन करना।
2. मूर्तियों की शैली, मुद्रा, आयुध, वाहन और प्रतीकात्मक विशेषताओं का विश्लेषण।
3. मूर्तिकला के माध्यम से धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सन्देशों को समझना।
4. स्थानीय मूर्तिकला पर पल्लव, चालुक्य, नागर और बौद्ध प्रभावों की पहचान करना।
5. संरक्षण की वर्तमान स्थिति और संभावित समाधान सुझाना।

3. प्रतिमा विज्ञान: एक परिचय

प्रतिमा विज्ञान (Iconography) वह शास्त्र है जो देवी-देवताओं, पौराणिक पात्रों और धार्मिक प्रतीकों की शास्त्रीय परिभाषाओं, मुद्रा, वाहन, आयुध, और चिन्हों का अध्ययन करता है। यह केवल मूर्ति की आकृति नहीं, बल्कि उसके पीछे की धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना को समझने का माध्यम है।

भारतीय प्रतिमा विज्ञान को शिल्पशास्त्र, वास्तुशास्त्र, अगम तंत्र, और पुराणों से दिशा मिलती है। "विश्वकर्मा वास्तुशास्त्र", "शिल्परत्न", "मयमतम्" आदि ग्रंथों में मूर्ति निर्माण की संहिताएँ दी गई हैं।

4. बुंदेलखंड: ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

बुंदेलखंड मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बीच स्थित है, जहाँ खजुराहो, ओरछा, देवगढ़, कालिंजर, महोबा, टीकमगढ़, और चित्रकूट जैसे सांस्कृतिक स्थल मौजूद हैं। यहाँ 9वीं से 14वीं शताब्दी के मध्य चंदेल, कच्छपघात, बघेल और बुंदेला राजाओं के शासनकाल में कलात्मक समृद्धि चरम पर थी।

- खजुराहो के मंदिर: विश्व प्रसिद्ध हैं, जहाँ विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश, देवी, नाग, यक्ष, अप्सरा, और मिथुन मूर्तियाँ अत्यंत ललित रूप में अंकित हैं।
- देवगढ़ मंदिर (ललितपुर): दशावतार मंदिर विशेष रूप से मूर्तिकला की दृष्टि से समृद्ध है।
- ओरछा मंदिर: बुंदेला स्थापत्य शैली का उत्तम उदाहरण हैं, जहाँ मूर्तियाँ अपेक्षाकृत बाद के काल की हैं।

हेमलता तिवारी, बुंदेलखंडी मंदिरों में उपस्थित मूर्तिकला का प्रतिमा वैज्ञानिक पक्ष, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 15-17*

5. मूर्तियों की प्रतिमा वैज्ञानिक विशेषताएँ

5.1 देव मूर्तियाँ (Divine Sculptures)

(क) शिव मूर्ति:

- त्रिशूल, डमरु, नाग, तीसरी आँख, जटाजूट।
- नटराज रूप में तांडव करते हुए मूर्तियाँ।
- पार्वती, गणेश, कार्तिकेय के साथ पारिवारिक मूर्तियाँ।

(ख) विष्णु मूर्ति:

- चक्र, गदा, शंख, पद्म।
- दशावतार स्वरूप - वाराह, नरसिंह, वामन, राम, कृष्ण की प्रतिमाएँ विशेष।
- गरुड़ पर आरूढ़ मूर्तियाँ।

(ग) सूर्य देव:

- रथ पर सवार, सात अश्व, कमल में खड़े।
- ओरछा और देवगढ़ में सूर्य मूर्तियाँ विशेष प्रसिद्ध।

(घ) देवी मूर्तियाँ:

- दुर्गा (महिषासुरमर्दिनी), लक्ष्मी, सरस्वती।
- सप्तमातृका की समूह प्रतिमाएँ।

5.2 यक्ष, गंधर्व, मिथुन और लोक प्रतिमाएँ

- मिथुन मूर्तियाँ: प्रेम, आनंद और मानव जीवन के उत्सव की प्रतीक। खजुराहो में विशेष प्रसिद्ध।
- गंधर्व और किन्नर: संगीत व नृत्य मुद्रा में।
- यक्ष-यक्षिणी: समृद्धि और प्राकृतिक शक्तियों के प्रतीक।
- द्वारपाल: मंदिर के प्रवेश द्वारों पर भव्य रूप में।

5.3 वास्तु-शिल्पीय विशेषताएँ

- मूर्तियों की स्थिति: गर्भगृह, मंडप, शिखर, स्तंभों, द्वारों पर।
- मुद्रा: स्थिर, चलनशील, नृत्यरत, ध्यानमग्न।
- अनुपात: अंगुलि-प्रमाण, त्रैलोक्यन्याय के अनुसार।
- अलंकरण: गहनों, मुकुट, वस्त्र, कंठहार, करधनी आदि का विस्तृत अंकन।

6. स्थापत्य शैलियाँ और मूर्तिकला का संबंध

बुंदेलखंड में मुख्यतः नागर शैली में मंदिर बने हैं। खजुराहो में यह शैली अपने चरम पर है।

- नागर शैली में रेखा शिखर और समृद्ध मूर्तिकला का संयोजन मिलता है।
- प्रत्येक मंदिर की भित्तियों पर 600 से 900 तक मूर्तियाँ होती हैं।

हेमलता तिवारी, बुंदेलखंडी मंदिरों में उपस्थित मूर्तिकला का प्रतिमा वैज्ञानिक पक्ष, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 15-17*

- प्लास्टिक आर्ट का उत्कर्ष - मूर्तियाँ पत्थर में उकेरी गई होते हुए भी अत्यंत कोमल प्रतीत होती हैं।

7. मूर्तियों में सामाजिक और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति

- नारी स्वरूप की विविधता - देवी, अप्सरा, गृहिणी, नर्तकी।
- समाज का वर्गीकरण - कृषक, सेनानी, व्यापारी, भिक्षु, ऋषि, आदि।
- लोककथाएँ और पौराणिक आख्यान - रामायण, महाभारत, भागवत की दृश्यावलियाँ।

8. संरक्षण की स्थिति और चुनौतियाँ

- समय, पर्यावरण, मानव उपेक्षा और अतिक्रमण के कारण मूर्तियाँ क्षतिग्रस्त।
- चोरी और अंतरराष्ट्रीय अवैध व्यापार की शिकार।
- कई मूर्तियाँ बिना पहचान के खुले में पड़ी हैं।

समाधान:

- डिजिटल डॉक्युमेंटेशन।
- स्थानीय संरक्षण समितियों की भागीदारी।
- पुरातात्विक सर्वेक्षण द्वारा पुनः वर्गीकरण और संरक्षण।

9. निष्कर्ष

बुंदेलखंड की मूर्तिकला भारतीय कला और धर्म का गौरवशाली अध्याय है। यहाँ की मूर्तियाँ केवल शिल्प नहीं, आत्मा की अभिव्यक्ति हैं। इनकी प्रतिमा वैज्ञानिक व्याख्या न केवल धार्मिक धरोहर को समझने में सहायक है, बल्कि वर्तमान पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का सेतु भी है।

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 18-24*

महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति

सुप्रिया प्रभाकर जोशी*

विश्व में सबसे विशाल एवं महाद्वीप है-एशिया महाद्वीप। भारतीय भूभाग एशिया महाद्वीप का दक्षिणी विस्तार है यह भूभाग का भौगोलिक वर्णन निम्नवत है- मुख्य भूमि ८ डिग्री ४ मिनट और ३७ डिग्री ६ मिनट उत्तरी अक्षांश और ६८ डिग्री ७ मिनट तथा ९७ डिग्री २५ मिनट पूर्वी देशांतर के बीच स्थित है। भारत की संस्कृति बहुआयामी है जिसमें भारत का गौरवशाली इतिहास और सिंधु घाटी की सभ्यता के मिलाप से बनी हुई है।

आज भारत विज्ञान के उन्नति के जोर पर चंद्र, मंगल ग्रह पर उतरकर अपनी क्षमता को प्रदर्शित कर रहा है। भारत वैश्वीकरण के साथ हाथ में हाथ डालकर विश्व के साथ प्रगति कर रहा है किंतु अपनी संस्कृति को भुला नहीं है। इस प्रगतिशील मार्ग को प्रशस्त करने की प्रेरणा हमारे इतिहास, कला एवं सस्कृति में है।

भारतवर्ष में आज २८ राज्य है जिनमें महाराष्ट्र भारत का सबसे धनी एवं समृध्द राज्य है। महाराष्ट्र भारत का तीसरा सबसे बडा राज्य है। महाराष्ट्र में विभिन्न संस्कृतियों जुडाव एक साथ मिलते है। महाराष्ट्र यह साधु-संतों की भूमि है, समाज सुधारकों की भूमि है। इस राज्य में धर्म निरपेक्षता यह एक प्रमुख विशेषता है जो अन्य धर्मों की मान्यताएँ बडे सम्मान से अपनाता है। यही वजह है कि महाराष्ट्र में हिंदु, मुस्लिम, बौध्द, पारसी, ख्रिश्चन, जैन, सिख आदि धर्म तथा उनके पंथ यहाँ पर शांति से रहते है।

महाराष्ट्र की अनेक संस्कृतियाँ उल्लेखनीय एवं लोकप्रिय है। उनमें महाराष्ट्र की सामाजिक संस्कृति गणेशोत्सव,ईद,दिवाली, होली के साथ अनेक राजाओं, समाज सुधारकों के जन्मदिन बडे धुमधाम से मनाएं जाते है। महाराष्ट्र की कला- हस्तकला भी प्रसिध्द है। नृत्यकलाओं में लावणी, गोंधळी, वाघ्या-मुरळी के साथ भारुड, पोवाडा, गवळणी, कीर्तन-भजन, लोकनाट्य, जात्यावरच्या ओव्या, दशावतार आदि कलाएँ सम्मिलित है। महाराष्ट्र की खाद्य संस्कृति में मसालेदार व्यंजन शामिल है, यहाँ पर गेंहू, जवार, बाजरा, चावल, दाल, आदि से व्यंजन बनते है। जिनमें महाराष्ट्र का मिष्टान्न पुरणपोळी प्रसिध्द है। महाराष्ट्र के राजा-महाराजाओं के विजय का डंका बजाते अनेक गढ-किले आज भी खडे है जिन्हें देखकर मन गर्व और अभिमान से प्रफुल्लित होता है । साथ ही नासिक, पुणे, औरंगाबाद की गुफाएँ जो विश्व प्रसिध्द है उनमें औरंगाबाद के एलोरा की सभी गुफाएँ और कैलाश गुफा के जैसी सुंदर गुफाएँ विश्व में कहीं भी नहीं है। महाराष्ट्र के संस्कृति में उल्लेख आवश्यक है यहाँ के वेशभूषा का। वेशभूषा की परंपरा अगर देखी जाएँ तो पुरुषों का पेहराव है धोती-सदरा(शर्ट) और सिर पर पटका। महिलाएँ नौ गज की नऊवारी साडी पहनती थी, आज भी ग्रामीण भागों में महिलाएँ नऊवारी पहनती है। वर्तमान में कुछ महिलाएँ छः गज की साडी परिधान करती है।यहाँ की पैठणी,शालु अधिक प्रसिध्द है। औरंगाबाद के पैठण तहसील में तैयार होनेवाली पैठणी रेशमी धागे से बनती है तो शालु नामक साडी दुल्हन शादी में पहनती है इसका उल्लेख मराठी गीत में भी हुआ है," पदरावरती जरतारीचा मोर नाचरा हवा, आई मला नेसव शालु नवा."

महाराष्ट्र के अनेक संस्कृति के साथ महाराष्ट्र धर्म यह संस्कृति प्रसिध्द है जो यहाँ के निवासी लोगों को धार्मिक सहिष्णु बनाती है जिसकी आज समुचे विश्व को आवश्यकता है। इसी पेहराव के साथ ही महत्व है- आभुषणों का। श्रृंगार करना, सुंदर दिखना यह नारी का पसंदीदा विषय है। विश्व में नारियों को गहनों से कितना लगाव है यह अलग से बताने की आवश्यकता नहीं। महाराष्ट्र के पारंपारिक आभुषणों के बारे में चर्चा

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 18-24*

करेंगे।

भारत में आभुषणों का इतिहास प्राचीन है। भारतीय साहित्य में सोलह श्रृंगार की प्राचीन परंपरा रही हैं। आदि काल से ही स्त्री और पुरुष दोनों प्रसाधन करते आए हैं।

प्राचीन संस्कृत साहित्य में षोडश श्रृंगार की गणना अज्ञात प्रतीत होती है। अनुमानतः यह गणना वल्लभदेव की सुभाषितावली (१५ वीं शती या १२ वीं शती) में प्रथम बार आती है। उनके अनुसार वे इस प्रकार हैं–

आदौ मज्जनचीरहारतिलकं नेत्रांजनं कुडले, नासामौक्तिककेशपाशरचना सत्कंचुकं नूपुरौ।

सौगन्ध्य करकंकणं चरणयो रागो रणन्मेखला, ताम्बूलं करदर्पण चतुरता श्रृंगारका षोडण।।

१६ वीं शती में श्री रूपगोस्वामी के उज्वलनीलमणि में श्रृंगार की यह सूची इस प्रकार गिनाई गई है–

स्नातानासाग्रजाग्रन्मणिरसितपटा सूत्रिणी बद्धवेणिः सोत्त सा चर्चितांगी कुसुमितचिकुरा स्त्रग्विणी पद्महस्ता। : ताम्बूलास्योरुबिन्दुस्तबकितचिबुका कज्जलाक्षी सुचित्रा। राधालक्चोज्वलांघ्रिः स्फुरति तिलकिनी षोडशाकल्पिनीयम्।।

रीतिकाव्य के आचार्य केशवदास ने भी सोलह श्रृंगार की गणना इस प्रकार की है–

प्रथम सकल सुचि, मंजन अमल बास, जावक, सुदेस किस पास कौ सम्हारिबो।

अंगराग, भूषन, विविध मुखबास-राग, कज्जल ललित लोल लोचन निहारिबो।

बोलन, हँसन, मृदुचलन, चितौनि चारु, पल पल पतिब्रत प्रन प्रतिपालिबो।

'केसौदास' सो बिलास करहु कुँवरि राधे, इहि बिधि सोरहै सिंगारन सिंगारिबो।

यह हिंदी साहित्य में श्रृंगार के कुछ प्रमाण हम देख सकते है।

आर्य,द्रविड के कालखंड से हमें स्त्री और पुरुष आभुषण पहनते हुए दृष्टिगत होते है। सिंधु संस्कृति,मोहनजोदडो और हडप्पाकालीन संस्कृति का शोध कार्य हुआ उसमें मिट्टी के कंगन, शंख के कंगन और स्टेटाइट नामक नरम पत्थर के पावडर से तैयार किए गए मणि मिले,साथ ही इनमें तांबे धातु के गहने भी मिले है। खुदाई के समय स्त्री-पुरुषों के शरीर पर कंगन,गले में माला-हार,कमरबंध, तावीज,मुकुट दृष्टिगत हुए।

महाराष्ट्र में सोने,चांदी के साथ मोती के गहनों का महत्व अधिक है। इन गहनों से केवल सौंदर्य में वृध्दि नहीं होती अपितु यह प्रकृति के लिए भी बडा लाभदायक सिध्द होता है।

१) बाल: महाराष्ट्र में बालों की सुंदरता को बढाने के लिए मोगरा,जाई-जुई,जैसे फुलों का गजरा लगाया जाता है, साथ ही हर प्रकार के गुलाब का फूल लगाया जाता है किंतु कुछ वर्ष पहले सोने के फुल, पीन बालों में पिरोई जाती थी।

अ)अंबाडा फुल:- मराठी में जुडे को अंबाडा कहा जाता है,इस जुडे पर जो सोने का फुल लगाया जाता था उसे अंबाडा फुल कहा जाता है।

आ)जुडा पीन :- जुडे को सजाने के लिए बडे पत्ते के आकार की यह पीन होती है जो जुडे पर लगाई जाती है।

इ)गुलाब पीन:-जुडे को सजाने के लिए ही गुलाब के फुल के जैसा सोने का यह फुल होता था

ई)वेणी:-वेणी नामक यह पीन है जो जुडे में और चोटी जहाँ से शुरु होती है वहाँ पर यह पीन लगाई जाती है

यह सारे फुल और पीन बालों का सौंदर्य बढाने के लिए लगाते थे साथ ही चोटी या जुडा ना छुटे इसे बांधकर

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 18-24*

रखने का काम यह पीन करती थी।

२) कान: - भारत के विभिन्न राज्यों में कानों में अनेक आभुषण पहने जाते है। महाराष्ट्र में कानों में लवंग,बुगडी,हुजुर,कुडक और कर्णफुल पहने जाते है। लवंग यह कान के बिल्कुल उपरी भाग पर पहना जाता है। मराठी में लौंग को लवंग कहा जाता है, यह गहना लौंग के समान दिखता है इसी कारण इसे लवंग कहते है। लवंग सोने के होती है।

बुगडी यह महाराष्ट्र का पारंपारिक गहना माना जाता है,यह महाराष्ट्र की विशेषता है। इसे दोनों ओर हुक होता है इससे पहनने में सुविधा हो। यह सोने और मोती में उपलब्ध होता है।

कुडक यह कान के सामनेवाले छोटे हिस्से में पहना जाता है।

हुजुर कान में उपर से तीसरे नंबर पर पहनी जानेवाली बालि होती है।

कर्णफुल यह कानों में पहने जानेवाला विशेष आभुषण है। आजकल कर्णफुल की जगह पर झुमका,कुड्या,डुल पहनती हुई नजर आती है। वर्तमान में नवीन आकर्षक डिझाईन्स बाजार में मिलती है उन्हें महिलाएँ पहनती है। केवल श्रृंगार करना इसके पीछे उद्देश्य नहीं होता, अत: कानों के यह गहने ॲक्युप्रेशर का काम यह आभुषण करते है।

३)नाक :-नथ यह नाक में पहनी जाती है। आदिकाल से यह नथ मोती और सोने की होती है। नथ पहने से नारी का अहम भाव अल्प होने में मदद होती है और प्रकृति का स्वास्थ बना रहता है,ऐसा माना जाता है। यह भी माना जाता है कि इससे नारी की अंतर्मुखता बढते हुए आत्म परीक्षण का भाव उत्पन्न होता है ।

वर्तमान में महिलाएँ डायमंड,सोने की लौंग पहनती है साथ ही नोज पीन पहनने की क्रेझ लडकियों में है।

४) गला: - गले में पहने के अनगिनत आभुषण हमें मिलते है। प्राचीन समय में अनेक कीमती पत्थर ,छोटे-छोटे शंख या समुद्र से मिलनेवाले अनेक पदार्थों से माला एवं हार बनाकर महिलाएँ धारण करती थी इसके प्रमाण मिले है। माना जाता है कि पहले रानिया-महारानिया जुगनुओं की माला बनाकर पहनती थी जिसे ' काजव्यांचे दागिने 'कहा जाता था।

i) ठुशी: महाराष्ट्र में ठुशी नामक पहना जाताअ है इसे लाल रंग के रेशमी वस्त्र पर जवार जैसे सोने के मणियों की बुनाई की जाती है । इसमें सोने के मणि ठसाठस भरे होते है इसलिए उसे 'ठुशी' कहा जाता है। ठुशी को चोकर की तरह गले में फीट पहना जाता है। इसमें उपयोग किए मणि जवार की तरह होने के कारण घर में समृध्दि रहती है ऎसी भावना इसके पीछे होती है।

ii) चिंचपेटी : चिंच यानि इमली। इमली के पत्तों की तरह सोने की पेटी पर मोती तथा हीरों से उसे सजाया जाता है, यह सारा रेशीम के धागे से बुना जाता है। यह भी गले पर चोकर की तरह पहना जाता है।

iii)वज्रटीक : वज्रटीक इस आभुषण पर बडा ही नाजुक नक्षी काम होता है।यह गहना तैयार करते समय पुरा ध्यान रखा जाता है कि यह गहना परिधान करने के बाद चुभे नहीं। रेशमी धागों से छोटी सी गद्दी तैयार करके उस पर W आकार की पेटी की गोलाकार माला तैयार की जाती है,उसके बगल में ही गोल मणियों की एक माला की बुनाई की जाती है।

वज्र यह शब्द यहाँ पर सुरक्षापरक प्रयोग हुआ है। महाराष्ट्र की तुळजापुर और कोल्हापुर की देवी के गले में वज्रटीक अवश्य देखने मिलती है।

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 18-24*

iv) पोहे हार : पोहा यह अनाज भारत में सभी ओर मिलता है किंतु महाराष्ट्र में पोहा सबसे अधिक नाश्ते के लिए उपयोग में लाया जाता है। इसी पोहे की तरह छोटी-छोटी अनेक पत्तियों को एक साथ मिलाकर एक लडी तैयार होती है उसी को पोहे हार कहते है।

यह हार सोने का बनाया जाता है। यह हार महिलाएँ हैसियत से १-२-३ लेयर तक बनाती है।

v)चपला हार: पोहे हार की तरह छोटी-छोटी पत्तियों को जोडकर बनता है, जो महिलाओं को अधिक प्रिय है।

vi) राणी हार : राणी हार का इतिहास हम राजस्थानी संस्कृति में हमें मिलता है। अनेक राजा-महाराजाओं के घरों में यह राणियों द्वारा धारण किया गया हार है इसलिए इसे राणी हार नाम पडा। यह हार अधिक तर सोने का होता है,यह हार ३-५-७ लेयर में मिलता है।

viii)बकुळी हार: बकुळी हार यानि बकुल या बकल,मौलसरी का फुल कहा जाता है। इस आकार की पत्तियों को कडी से जोडकर यह हार १-२-३ लेयर का सुंदर हार बनता है।

ix)एक दानी: मटार के दाने के समान सोने के मणि जोडकर यह माला तैयार की जाती है।

x)मोहन माळ: चने के दाल के आकार के सोने के मणियों पर सुंदर नक्षी होती है इन मणियों को जोडकर मन को मोहित करनेवाली यह माला होती है। २-३ लेयर या उससे अधिक लेयर में यह उपलब्ध होती है।

xi)लक्ष्मी हार : छोटे गोल पत्तियों पर माँ लक्ष्मी की छवि उतारी जाती है,इन पत्तियों को जोडकर लक्ष्मी हार बनाया जाता है।

xii)पुतळी हार: प्राचीन आभुषणों में सोने की मुद्राएँ(जो पहले का चलन था) एकत्रित करके ' निष्क ' यह आभुषण तैयार हुआ, यही १६-१७वीं सदीं में महाराष्ट्र में पुतळी हार नाम से लोकप्रिय हुआ। इसमें भी सोने की गोल पत्तियों पर लक्ष्मी माँ के साथ हाथियों की छवि देखी जा सकती है। एक माला में ११ सोने की पत्तियाँ होती है उससे यह हार बनता है।

xiii)बेलपानटीक : यह भी महाराष्ट्र का पुराना आभुषण है। बिल्व पत्र या बेल पत्र जो भगवान शिव जी को अर्पण किया जाता है,इस बेल पत्र के आकार समान सोने पत्तों की बुनाई लाल रेशमी धागों पर की जाती है,अत्यंत लुभावना यह हार होता है।

xiv)कोल्हापुरी साज: इस आभुषण को ६० साल से अधिक पुरानी परंपरा है। इस माला पर अनेक शुभ एवं मंगल कारक प्रतीकों का नक्षी काम होता है जैसे:- चंद्र,शंख, चक्र,नाग, कछुआ यह शुभ चिन्ह दोनो ओर होते है। साथ ही अनेक प्रकार की पत्तियों का भी इसमें समावेश होता है,बीच में बडा सा पेंडेंट होता है जिस पर लाल रंग का रत्न होता है। महाराष्ट्र में कोल्हापुरी साज का अलग स्थान है और बडे लोकप्रिय आभुषण है।

xv) मंगलसूत्र: शास्त्रों में विवाहित महिला को मंगलसूत्र जरूर जरूर पहनने की सलाह दी जाती है। इससे वैवाहिक रिश्ते में मजबूती आती है। साथ ही मंगलसूत्र के काले मोतियों से दांपत्य जीवन को किसी की बुरी नजर नहीं लगती है।मां दुर्गा के नौ स्वरूप होते हैं। मंगलसूत्र में 9 मनके होते हैं, जो मां दुर्गा के नौ स्वरूपों का प्रतिनिधित्व करते हैं। मंगलसूत्र के 9 मनके को पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि का प्रतीक माना गया है। वहीं मंगलसूत्र के काले मोती से पति और दांपत्य जीवन को बुरी नजर नहीं लगती है।

गले के आभुषणों में मंगलसूत्र का महत्व तो अधिक ही है,इसके साथ ही महाराष्ट्र में चंद्र हार, चितांग,बोर माळ, जोंधळे मणि गुंड,आदि ऎसे मालाओं के प्रकार है।

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 18-24*

५) हाथ : महाराष्ट्र में बाहुओं में भी गहने पहने जाते है।

1)बाहु-

i)नागोत्र: नाग के शरीर की तरह गोलाकार करके दर्शनीय भाग में नाग का फन दिखता है,यह बाहु में पहना जाता है।

ii) नागबंद: नाग ने पुरी तरह बाहु को जकडकर रखा हो ऎसा गहना होता है नागबंद।

iii)वाकी: वाकी नामक आभुषण चटई की तरह बुनी हुई प्रतीत होती है, इस पर नाजुक नक्षी काम होता है।

iv)वेळा: वेळा यह गहना थोडा मोटा सा होता है जिसके सामनेवाले भाग में जालीदार नक्षी होती है।

v)बाजुबंद: बाजुबंद यह अलग-अलग डिझाईन उपलब्ध होता है इसका निश्चित एक रुप नहीं होता ।

2)हाथ:

i)पाटल्या: चुडियों के अनेक प्रकारों में यह प्रसिध्द प्रकार है,यहाँ पर प्रत्येक महिला का सपना होता है कि पाटली उसके संग्रह में अवश्य हो। गोल चुडी पर उपर से अनेक कोन दिखाई देते है। इस कोन पर आजकल फुलों की नक्षी भी पायी जाती है।

पाटली यह आभुषण प्राचीन है,मोहनजोदडो के खुदाई में एक स्त्री के हाथों में यह पाटली समान कंगन मिले है।

ii)गहु तोडे: एक चुडी पर गेंहु के दाने के समान सोने के मणि जोडे जाते है यह गहु तोडे हाथों में अत्यंत सुंदर दिखते है। इसे हाथों में पहनने के बाद हाथों में किसी ओर चुडी की आवश्यकता महसुस ही नहीं होती।

iii)कोयरी तोडे: आम इस फल को महाराष्ट्र में अधिक महत्व है। खाद्य संस्कृति में आम रस,आम का आचार महत्वपूर्ण है,वैसे ही आभुषणों में भी आम की गुठली को स्थान मिला है। चुडी पर गुठली के डिझाईन से यह कोयरी तोडे बनते है।

iv)बिल्वर: बिल्वर चुडी का प्रकार है जिसमें विभिन्न फुल-पत्तों के आकार से साथ जालीदार नक्षी अत्यंत सुंदर दिखती है इसे बिल्वर कहा जाता है।

महाराष्ट्र की महिलाएँ प्रतिदिन काँच की चुडियाँ पहनती है, उपर्युक्त चुडियों के प्रकार के साथ पुरण पाटली,शिंदेशाही तोडे आदि चुडियों के प्रकार पहने जाते है।

६) अंगठी: ऊंगली में पहना जानेवाला गहना अंगुठी है।यह महिला व पुरुष दोनों पहनते है,दोनों भी पाँचो ऊंगलीयों में अंगुठी पहनी जाती है। इसकी विविध डिझाईस उपलब्ध है. हीरे,सोना, मोती के साथ अनेक रत्नों की अंगुठीयाँ मनोवांछित फलप्राप्ति के लिए पहनी जाती है।

७) कमरबंध: भारत के प्रत्येक राज्य में कमर बंध यह आभुषण हम देखते ही है। उसी तरह महाराष्ट्र में मोती,रत्न और सोने के कमरबंध प्राप्त होते है, जो महाराष्ट्र के श्रृंगार संस्कृति में महत्वपूर्ण है।

i)मेखला: मेखला यह साडी परिधान करने पर पहने जानेवाला गहना है,जो साडी पर बाईं ओर लगाया जाता है,इसे दो छोर होते है।

ii)छ्ल्ला: छ्ल्ला भी साडी पर बाईं ओर लगाया जाता है जो अधिक तर चांदी का पाया जाता है। उसके सुंदरता बढाने के लिए उसे छोटे घुंघरु भी लगाएं जाते है।

८) पायल: पायल सभी राज्यों में पहनी जाती है। दक्षिण भारत में पायल सोने की भी पहनी जाती है, देश के

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 18-24*

अनेक हिस्सों में पायल के विभिन्न प्रकार पाएँ जाते है।

i)गजरी पैंजण: इस पायल के प्रकार पर फुलों की नक्षी होती है, जो एक पट्टी के समान दिखती है और उस पट्टी के नीचे घुंघरु जोडे जाते है। यह पायल झांझरियाँ

के जैसे दिखते है।

ii)तोरड्या: तोरड्या भी पायल का एक प्रकार है। श्रीराम के बाल लीलाओं का वर्णन करते हुए समर्थ रामदास जी कहते है,

कीरीट कुंडले माला विराजे। झळ्झळ गंडस्थळ धननिळ तनु साजै।। घंटा किंकणी अंबर अभिनव गती साजै। अंदवाकी तोडर नुपुर ब्रीद गाजे। ।

वर्तमान में पायल के अनेक डिझाईन्स आज बाजार में मिलती है जिन्हें महिलाएँ बडे ही चाव से पहनती है।

९) जोडवी/बिछिया: विवाहित महिलाएँ जोडवी पहनती है। अंगुठे के बगल के ऊंगली में यह पहने जाते है,इसका चाँदी का होना आवश्यक माना जाता है। कहा जाता है कि इस ऊंगली की नस नारी के गर्भाशय से जुडी होती है इसलिए यह विवाहित महिलाओं का श्रृंगार माना जाता है।

i)मासोळी: यह भी बिछिया का एक प्रकार है,जो पैर के अंगुठे की ओर से चौथी ऊंगली में यह पहनी जाती है। यह मछली के जैसी होती है इस वजह से इसे मासोळी कहा जाता है।

उपर्युक्त सभी अलंकार केवल सौंदर्य में वृध्दि होने के लिए धारण नहीं किए जाते। भारतीय धर्म एवं संस्कृति का आधार विज्ञान है। इसमें से अधिक गहने एक्युपंक्चर तथा ॲक्युप्रेशर का काम करते है। इससे पाचन,रोग प्रतिकार,रक्त संचार कुल मिलाकर प्रकृति स्वास्थ केलिए लाभदायक सिध्द होते है गले में सोने का हार पहनने से विशुध्द चक्र जागृत होता है तो नाभिचर पर कमर बंध पहनने से यह चक्र सक्रिय अवस्था में रहता है। पायल और जोडवे पहनने से जमीन से निकलनेवाली अशुभ शक्तियों से बचाव होता है। पायल यह पैरों निकलनेवाले विद्युत ऊर्जा को सुरक्षित रखते है,साथ ही फॅट्स कम होने में मदद होती है। चूड़ियाँ पहनने से रक्त संचार योग्य गति से होता है, चुडियों से श्वसन संबंधी और ह्रद्य रोग से भी बचा जा सकता है। जोडवी पहनने से हार्मोन्स संतुलित रहते है,थायरॉईड की तकलीफ नहीं होती,पैर के एक नस पर दबाव आने से गर्भाशय को रक्त संचार होता है।

सत्य यह है कि सोना यह उष्ण धातु है तो चांदी शीतल होती है इसलिए नारीयों ने कमर से उपरी हिस्से में सोने के गहने पहनने चाहिए और कमर से नीचे चांदी पहनने पर जोर दिया जाता है।इससे शरीर का तापमान संतुलित रहता है। बाए हाथ में अंगुठी पहनने से ह्रद्य को रक्त का संचार होता है। नथ पहनने से नींद संबंधी समस्याएँ,सिर दर्द और प्रसुति समय की वेदना कम होती है। भाल पर कुंकुम लगाना आवश्यक माना जाता है, योग धर्म में माना जाता है कि दोनों भौंहो के बीच आज्ञा चक्र होता है इसीके माध्यम से हमारे मस्तिष्क को हमारे ज्ञानेद्रियों से संदेश भेजा जाता है। इतने सारे लाभ हमारे भारतीय संस्कृति के आभुषण संस्कृति में है। यह सारे पारंपारिक गहने आज ग्रामीण भागों में अधिक दिखाई देते है, शहरों में भी वर्तमान में यह फायदे देखते हुए अनेक महिलाएँ यह गहने पहनने लगी है।

सोना और चांदी के बढते हुए दाम देखते हुए मध्यमवर्गीय लोगों के लिए १ ग्रॅम गोल्ड में सारे श्रृंगार के प्रकार उपलब्ध है।जो नारियाँ यह भी नहीं खरीद सकती वह बेनटेक्स के गहने खरीदती है।

उपर्युक्त विवेचन से हम यही निष्कर्ष निकाल सकते है कि समय कितना भी क्यों न बदल जाए लेकिन

सुप्रिया प्रभाकर जोशी, महाराष्ट्र की समृध्द आभूषण संस्कृति, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 18-24*

आभुषणों का महत्व कम नहीं हुआ है। संस्कृति के बजाय आभूषण का वैज्ञानिक तर्क यह बताता है कि वह व्यक्ति की उमर बढाता है और स्वास्थ अच्छा रखते है। इन गहनों के टुकडे,डिझाईन्स में उपलब्ध हुए हो लेकिन उनका मुल्य कम नहीं हुआ। यह हमारे पुर्वजों की अनमोल विरासत और आशिर्वाद है,जो एक दीर्घकालीन परंपरा है जिसका गौरव महाराष्ट्र ही नहीं समूचा भारतवर्ष कभी खोयेगा नहीं, ना ही यह गौरव की श्रृंखला खंडित करेगा।

कुशाग्र जैन, राजा रवि वर्मा: भारतीय चित्रकला के महानायक, कला समीक्षा , खंड 1,अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 25-26

राजा रवि वर्मा: भारतीय चित्रकला के महानायक

कुशाग्र जैन*

भारतीय चित्रकला के इतिहास में कई कलाकारों ने अपने समय में महत्वपूर्ण योगदान दिया, लेकिन कुछ ही कलाकारों ने देश और काल को पार करते हुए आम लोगों पर गहरी छाप छोड़ी। 29 अप्रैल 1848 को जन्मे राजा रवि वर्मा भी एक महान कलाकार थे। उन्हें भारतीय कला को एक नई दिशा और एक नया रूप भी मिला। भारतीय परंपरा, धर्म, संस्कृति और कहानियों को उनकी चित्रकला में यूरोपीय शैली के यथार्थवादी चित्रण से प्रस्तुत किया गया है।

राजा रवि वर्मा का जन्म कुलीन परिवार में हुआ था, जो केरल के किलिमानूर में था। उनकी माता, उमाम्बा थंपुराट्टी, एक विद्वान कवयित्री थीं, जिन्होंने 'पार्वती स्वयंवरम्' जैसे ग्रंथ लिखा था। पिता एझुमाविल नीलकंठन भट्टतिरिपाद संस्कृत और आयुर्वेद में प्रवीण थे।

रवि वर्मा का परिवार शाही परिवार से संबंधित था। उनके विवाह ने उन्हें राजघराने से अधिक करीब लाया। उनका विवाह मावेलिकरा की राजकुमारी भागीरथी बाई से हुआ, जो 12 वर्ष की थीं। उनके पांच बच्चे थे: दो पुत्र और तीन पुत्रियाँ।

रवि वर्मा के बचपन से ही चित्रकला के बीज दिखाई देने लगे। लकड़ी की कोयले और चारकोल से दीवारों पर चित्र बनाने लगे। त्रावणकोर के महाराजा अयिलम थिरुनल ने उनकी प्रतिभा को पहचानकर उन्हें चित्रकला की विधिवत शिक्षा दी। उन्हें पहले तंजावुर की पारंपरिक शैली में प्रशिक्षित किया गया, फिर ब्रिटिश चित्रकार थियोडोर जेंसन से तेल चित्रण (oil painting) की बारीकियाँ सीखीं।

रवि वर्मा की कला की शैली में यूरोपीय यथार्थवाद और भारतीय परंपरा का समन्वय है। उनके चित्रों में भारतीय पौराणिक कथाएँ, नारी सौंदर्य, धार्मिक भावनाएँ और मानवीय संवेदनाएँ बहुत ही सुंदर चित्रित हैं। उन लोगों ने देवताओं को मानवीय रूप में चित्रित किया, जिससे लोग उनके चित्रों से आत्मीयता महसूस करते थे।

उनकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

Realism: उन्होंने चेहरे के हाव-भाव, नेत्रों की भाषा और वस्त्रों की भव्यता को अत्यंत यथार्थ रूप में दिखाया।

छाया और रोशनी का प्रयोग: उन्होंने यूरोपीय तकनीक से प्रेरित होकर प्रकाश और अंधकार का अद्भुत संयोजन बनाया।

महिला सौंदर्य का वर्णन: उन्होंने भारतीय नारी को शालीनता, गरिमा और दिव्यता के साथ प्रस्तुत किया।

प्रमुख कृतियाँ

राजा रवि वर्मा की कुछ प्रसिद्ध कलाकृतियाँ निम्नलिखित हैं:

1. शकुंतला पत्र लिखती हुई
2. द्रौपदी चीरहरण
3. नल और दमयंती
4. गैलेक्सी ऑफ म्यूज़िशियंस
5. लक्ष्मी देवी

कुशाग्र जैन, राजा रवि वर्मा: भारतीय चित्रकला के महानायक, कला समीक्षा , खंड 1,*अंक*.1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 25-26*

6. सरस्वती देवी
7. सीता वनवास में
8. कृष्ण और यशोदा
9. उर्वशी और मेनका

इन चित्रों ने पौराणिक कथाओं को सजीव बना दिया।

1894 में, उन्होंने मुंबई के घाटकोपर में 'रवि वर्मा प्रेस' की स्थापना की, जहां उनके चित्रों की लिथोग्राफ प्रतियाँ बनाकर कम मूल्य पर बेची जाती थीं। इससे आम लोगों तक उनकी कला पहुंची। बाद में यह प्रेस लोनावाला स्थानांतरित किया गया। यह भारत का उस समय का सबसे बड़ा और उन्नत प्रिंटिंग प्रेस था।

भारतीय कला के इतिहास में उनकी ये पहल क्रांतिकारी थी, क्योंकि इससे आम जनता को देवी-देवताओं की सुंदर चित्रण देखने का अवसर मिला।

रवि वर्मा की कला को राष्ट्रीय ही नहीं, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सराहा गया:

- 1873: विएना आर्ट एक्सहिबिशन में पुरस्कार
- 1893: शिकागो वर्ल्ड फेयर में स्वर्ण पदक
- 1904: ब्रिटिश सरकार द्वारा 'कायसर-ए-हिंद' स्वर्ण पदक

रवि वर्मा ने नारी को भक्ति, शक्ति और सौंदर्य के रूप में चित्रित किया, हालांकि भारतीय समाज में नारी को परंपरागत भूमिकाओं में देखा जाता है। नारी उनके चित्रों में संस्कृति की संवाहिका और एक पात्र के रूप में उभरती है।

रवि वर्मा की लोकप्रियता के साथ-साथ उन्हें भी आलोचना मिली। उसकी कला को कुछ आलोचकों ने "कैलेंडर आर्ट" कहा और इसे सस्ता लोकप्रियतावाद बताया। उनके चित्रों को कुछ लोगों ने 'बहुत अधिक पश्चिमी' बताया। भारतीय जनता ने उनकी कला को दिल से माना।

रवि वर्मा की कलात्मक विरासत आज भी जीवित है:

- उनकी पोतियाँ त्रावणकोर के शाही परिवार में रानी बनीं।
- उनके वंशजों में प्रसिद्ध लेखक, संगीतज्ञ और कलाकार हुए।
- उनकी चित्रकला ने भारतीय फिल्मों और कैलेंडर कला पर गहरा प्रभाव डाला।
- 2013 में बुध ग्रह पर एक गड्ढे का नाम "वरमा क्रेटर" रखा गया।

रवि वर्मा के चित्रों को समकालीन कलाकार जैसे पुष्पमाला एन और नलिनी मलानी ने नए संदर्भों में पुनः प्रस्तुत किया है। अब भी, उनकी कलाकृतियां नीलामियों में करोड़ों में खरीदी जाती हैं।

राजा रवि वर्मा ने भारतीय संस्कृति को रंगों और भावनाओं में ढाला ही नहीं, बल्कि चित्र भी बनाए। वे न सिर्फ एक कलाकार थे, बल्कि एक सांस्कृतिक दृष्टा भी थे, जिन्होंने भारत की आत्मा को चित्रित किया। उनकी कला आज भी भारत की सांस्कृतिक चेतना का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। 29 अप्रैल को उनका जन्मदिन मनाकर हम एक ऐसे कलाकार को सम्मान देते हैं जिसने भारतीय कला को आम लोगों तक पहुंचाया।

शिवानी शाह, एडुअर्ड मानेट: आधुनिक कला के जनक, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक*.1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 27-29*

एडुअर्ड मानेट: आधुनिक कला के जनक

शिवानी शाह*

एडुअर्ड मानेट का नाम 19वीं शताब्दी के सबसे प्रभावशाली और विवादास्पद चित्रकारों में लिया जाता है। उन्होंने अपनी कला के माध्यम से पारंपरिक चित्रकला की सीमाओं को चुनौती दी और आधुनिक कला की नींव रखी। मानेट का जीवन, उनकी कला, और उनकी कृतियों के पीछे की सोच आज भी कला प्रेमियों और आलोचकों के बीच चर्चाओं का विषय हैं। इस लेख में, हम एडुअर्ड मानेट के जीवन, उनके कार्यों और उनके कला पर प्रभाव को विस्तार से जानेंगे।

एडुअर्ड मानेट का जन्म 23 जनवरी 1832 को पेरिस में हुआ था। वह एक समृद्ध और प्रतिष्ठित परिवार में पैदा हुए थे। उनके पिता, ऑगस्टे मैनेट, फ्रांस के न्याय मंत्रालय में उच्च पदस्थ अधिकारी थे, जबकि उनकी मां, यूजनी-डेसिरी फोरनियर, स्वीडन के शाही परिवार से संबंधित थीं। उनके परिवार का मानना था कि वह एक सरकारी अधिकारी या सेना के अफसर बनेंगे। लेकिन, उन्होंने परिवार की इच्छा के खिलाफ जाकर कला की दुनिया में कदम रखा।

मानेट ने पेरिस के लौवरे संग्रहालय में अध्ययन करते हुए अपनी कला यात्रा की शुरुआत की। उन्होंने पेंटिंग में थिओडोर ड्यूरेट और गुस्ताव कोर्टबेट जैसे प्रसिद्ध चित्रकारों के प्रेरणा ली के लिए आपके प्रारंभिक प्रशिक्षण। उनकी कला में डिएगो वेलाज़क्वेज़ और गुस्ताव कोर्टबेट की नाटकीय शैली का समावेश था। हालांकि, उन्हें पारंपरिक अकादमिक शिक्षा की बजाय, उन्होंने अपनी चित्रकला में एक अलग, अधिक स्वतंत्र दृष्टिकोण अपनाया।

मानेट का चित्रकला की पारंपरिक शैली से अलग रास्ता अपनाना उन्हें कला की दुनिया में एक क्रांतिकारी चित्रकार बना देता है।

उन्होंने यथार्थवाद (Realism) और इंप्रेशनिज़्म (Impressionism) जैसे आंदोलनों को प्रभावित किया। उनके द्वारा चुने गए विषय, तकनीक और रंगों का प्रयोग पहले से बहुत अलग और साहसिक था। मानेट ने पारंपरिक धार्मिक या ऐतिहासिक चित्रों के बजाय, समकालीन और आधुनिक जीवन को अपने चित्रों में उकेरा।

प्रमुख कृतियाँ और उनके विवाद

मानेट की कृतियाँ उनके समय में बहुत विवादों का कारण बनीं, लेकिन यही कारण था कि वह आधुनिक कला की दिशा में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुए।

"Le Déjeuner sur l'herbe" (1863)

मानेट की कृतियों में एक महत्वपूर्ण और विवादास्पद पेंटिंग "Le Déjeuner sur l'herbe" थी, जो 1863 में बनाई गई थी। इसमें एक नग्न महिला और दो पुरुष एक बाग में बैठकर भोजन कर रहे होते हैं। यह चित्र इस समय के पारंपरिक चित्रकला के मानकों से बाहर था, क्योंकि इस चित्र में महिलाओं को बिना किसी धार्मिक या मिथकीय संदर्भ के नग्न दिखाया गया था। इसके अलावा, यह चित्र एक सामान्य दृश्य को दर्शाता है, जिसमें कोई ऐतिहासिक या पौराणिक संदर्भ नहीं है। यह चित्र Salon des Refusés में प्रदर्शित हुआ, जहाँ यह चित्र एक बड़ी आलोचना का शिकार हुआ।

Olympia" (1863)

शिवानी शाह, एडुअर्ड मानेट: आधुनिक कला के जनक, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक*.1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 27-29*

"Olympia" (1863) मानेट का एक और विवादास्पद चित्र था। इस चित्र में एक नग्न महिला को बिस्तर पर लेटा हुआ दिखाया गया है, और वह सीधे दर्शक की ओर देख रही है। यह चित्र Titian के प्रसिद्ध चित्र "Venus of Urbino" से प्रेरित था, लेकिन मानेट ने इसमें एक आधुनिक महिला की छवि को प्रस्तुत किया, जो अपने शरीर को एक व्यावसायिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत कर रही है। मानेट ने अपनी कला में पारंपरिक चित्रकला के सौंदर्यशास्त्र को चुनौती दी, और उन्होंने अपने चित्रों में स्पष्ट और तीव्र रंगों का इस्तेमाल किया।

"A Bar at the Folies-Bergère" (1882)

मानेट की अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण कृतियों में से एक "A Bar at the Folies-Bergère" (1882) है, जो उनकी शैली का न केवल समापन करती है, बल्कि समकालीन जीवन के एक जटिल और व्याख्यायित दृश्य को प्रस्तुत करती है। इस चित्र में एक महिला बारमेड को दिखाया गया है, जो पेरिस के प्रसिद्ध कैबरे Folies-Bergère में खड़ी है। चित्र में एक बड़ा दर्पण है, जिसमें बारमेड का प्रतिबिंब नहीं है, बल्कि वहाँ के दर्शकों की छाया दिखाई दे रही है। यह चित्र दृश्यता, भ्रम और मनोविज्ञान के तत्वों से भरपूर है।

मानेट की कला को हमेशा एक क्रांति माना जाता है। उन्होंने यथार्थवाद और इंप्रेशनिज़्म आंदोलनों को प्रभावित किया, और उनके काम ने कला की पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती दी।

उनकी कला में विशेषतौर पर निम्नलिखित पहलुओं का समावेश था:

यथार्थवाद (Realism): मानेट ने पारंपरिक चित्रकला के बजाय, जीवन के सामान्य दृश्यों और आधुनिक जीवन को चित्रित किया। उन्होंने नग्नता, श्रमिक वर्ग, और सामाजिक परिवर्तनों को अपने चित्रों में शामिल किया।

नवीन रंगों का प्रयोग: मानेट ने अपने चित्रों में पारंपरिक रंगों से बाहर जाकर नए रंगों का प्रयोग किया। उनकी कला में जीवंतता और ऊर्जा की एक अलग ही भावना थी।

ब्रशवर्क और तकनीक: मानेट का ब्रशवर्क बहुत अद्वितीय था। उन्होंने तीव्र और स्पष्ट ब्रश स्ट्रोक का प्रयोग किया, जिससे उनकी कला में गति और ऊर्जा का अहसास होता था।

एडुअर्ड मानेट का व्यक्तिगत जीवन भी कला की तरह ही जटिल और दिलचस्प था। उन्होंने पेरिस की उच्च समाज में अपनी जगह बनाई और उनके कई दोस्त और सहयोगी प्रसिद्ध कलाकारों में से थे। वे बर्थे मोरिसोट (एक प्रसिद्ध इंप्रेशनिस्ट कलाकार) से गहरे मित्रता राके, और एमिल ज़ोला जैसे प्रसिद्ध आलोचकों के साथ उनके गहरे संबंध थे।

उनके जीवन का एक दुखद पहलू यह था कि उनकी कला को शुरुआती वर्षों में कोई बड़ी सफलता नहीं मिली। उनकी कृतियों को लेकर आलोचना और व्यंग्य करते हुए, उन्हें बहुत कम सम्मान मिला। लेकिन, उनके जीवन के अंत तक, उनकी कला ने महत्वपूर्ण पहचान बनाई।

मानेट का स्वास्थ्य खराब रहने लगा था, और वह एक लंबे समय तक बीमारी से जूझते रहे। उन्होंने 30 अप्रैल 1883 को पेरिस में अपनी आखिरी सांस ली।

मानेट का निधन उनकी कला के अंतिम चरण में हुआ, लेकिन उनकी धरोहर अब भी जीवित है। उनके कार्यों ने इंप्रेशनिस्ट आंदोलन के लिए रास्ता तैयार किया, और उनका प्रभाव आज भी आधुनिक कला में महसूस किया जाता है। उनकी कला ने पश्चिमी कला के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की।

शिवानी शाह, एडुअर्ड मानेट: आधुनिक कला के जनक, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 27-29*

उनकी कृतियाँ आज भी विश्वभर के प्रमुख संग्रहालयों में प्रदर्शित की जाती हैं और कला जगत में उनके योगदान को अत्यधिक सम्मानित किया जाता है। मानेट की शैली, उनके विषय, और उनके दृष्टिकोण ने कला की धारा को पूरी तरह से बदल दिया और उन्हें आधुनिक कला के जन्मदाता के रूप में स्थापित किया।

एडुअर्ड मानेट के कार्य और उनके जीवन ने कला की दुनिया में एक क्रांतिकारी बदलाव लाया। उनकी कृतियाँ, जो पहले आलोचनाओं का शिकार हुई थीं, अब कला की सर्वश्रेष्ठ कृतियों के रूप में मानी जाती हैं। मानेट ने न केवल पारंपरिक चित्रकला के ढाँचों को तोड़ा, बल्कि उन्होंने आधुनिक जीवन, समाज और संस्कृति को अपने चित्रों में जीवंत रूप से प्रस्तुत किया। उनकी कला ने एक नई दिशा दिखलाई और उन्हें आधुनिक कला के जनक के रूप में पहचाना गया।

निहारिका जैन, प्रत्येक अस्वीकृति नवीन स्वीकृतियों को जन्म देती है सृजनात्मकता की स्वतंत्र उड़ान, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक*:1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 30*

प्रत्येक अस्वीकृति नवीन स्वीकृतियों को जन्म देती है सृजनात्मकता की स्वतंत्र उड़ान

निहारिका जैन*

मनुष्य जीवन में अस्वीकृति (Rejection) का सामना करना जितना आम है, उतना ही गहरा उसका प्रभाव भी होता है। कोई रचना अगर अस्वीकृत होती है, तो उसे कई बार अंतिम सत्य मान लिया जाता है – लेकिन यही दृष्टिकोण सृजनात्मकता के मूल स्वभाव के विपरीत है।

अस्वीकृति का अर्थ अंत नहीं, एक नई शुरुआत है

जब हमें कोई ठुकरा देता है – हमारा विचार, हमारी रचना, या हमारा प्रयास – तो यह स्वाभाविक है कि हम निराश हों। लेकिन यदि हम अस्वीकृति को एक सीढ़ी मानें, न कि दीवार, तो हम पाएँगे कि यही अस्वीकृति हमें नए दृष्टिकोण, नई ऊर्जा और नवीन रचनात्मकता की ओर प्रेरित करती है।

हर 'ना' के बाद एक नया 'हाँ' जन्म लेता है – कभी बाहरी दुनिया से, और कभी हमारे अपने भीतर से।

सृजनात्मकता: स्वीकृति से स्वतंत्र

सृजनात्मक होना स्वयं में एक कला है। यह किसी संस्था, व्यक्ति या समाज की मुहर पर आधारित नहीं होता। कोई चित्रकार जब कैनवास पर रंग बिखेरता है, वह यह सोचकर नहीं करता कि लोग सराहेंगे या नहीं। एक कवि जब शब्दों को पंक्तियों में पिरोता है, वह पहले अपनी भीतर की आवाज सुनता है।

सृजन की पहली स्वीकृति स्वयं से होती है, और यही सबसे महत्वपूर्ण है।

इतिहास के उदाहरण

विन्सेंट वैन गॉग के चित्र उनके जीवनकाल में अस्वीकृत हुए। जेम्स जॉयस, जे.के. रोलिंग, और रवीन्द्रनाथ ठाकुर तक को प्रारंभ में अस्वीकार किया गया। लेकिन क्या इससे उनकी सृजनात्मकता थमी? नहीं। उन्होंने अपनी राह खुद बनाई, और समय ने उनकी प्रतिभा को स्वीकृति दी – वह भी इतिहास के पन्नों में।

निष्कर्ष

अस्वीकृति डरावनी नहीं है, बल्कि यह एक संकेत है कि आप एक ऐसे मार्ग पर हैं, जो भीड़ से अलग है। यह वह ध्वनि है जो आपको पुकारती है – "आगे बढ़ो, नया सोचो, नया रचो।"

इसलिए, यदि आपकी किसी रचना को अस्वीकार किया गया है, तो याद रखिए:

"प्रत्येक अस्वीकृति नवीन स्वीकृतियों को जन्म देती है, साथ ही जन्म होता है नवीन सृजनात्मक का। सृजनात्मक होना कला है, स्वीकृत और अस्वीकृत होने का कल से कोई संबंध नहीं है।"

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, अंक.1 (अप्रैल 2025), पृ. 31-37

चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ

डॉ. मन्तोष यादव*

चित्रकूट की लोक कला संस्कृति विविधता और समृद्धि से परिपूर्ण है, जिसमें भित्ति चित्रण, पोथी चित्रण, महबुलिया कला, हस्तशिल्प, और मिट्टी के बर्तन जैसे विभिन्न कला रूप शामिल हैं। इस शोध का उद्देश्य चित्रकूट की इन कलाओं का साहित्यिक उल्लेख करना, इनके ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि को समझना, और इन कलाओं के विकास में आने वाली चुनौतियों और आशाओं की पहचान करना है। इस अध्ययन के लिए शोधविधि में साक्षात्कार, क्षेत्र कार्य, और साहित्यिक समीक्षा शामिल हैं, जिससे कला के विभिन्न पक्षों को समझने और उनका विश्लेषण करने में सहायता मिलेगी। ऐतिहासिक और भौगोलिक दृष्टि से, चित्रकूट अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है, जिससे यहाँ की कला में विशेष धार्मिक और सांस्कृतिक तत्व झलकते हैं। चित्रकूट की लोक कलाओं की प्रमुख विशेषताओं में रंगों का जीवंत उपयोग, धार्मिक और लोक कथाओं का चित्रण, और स्थानीय जीवन की अभिव्यक्ति शामिल हैं। इन कलाओं के संरक्षण और प्रोत्साहन में अनेक चुनौतियाँ हैं, जैसे आधुनिकता का प्रभाव, आर्थिक समर्थन की कमी, और पारंपरिक तकनीकों का विलुप्त होना। हालांकि, इन कलाओं को संरक्षित और विकसित करने की आशा भी है, जैसे स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर पर इनका प्रोत्साहन, शैक्षिक संस्थानों में इनका समावेश, और कलाकारों के लिए आर्थिक सहायता की व्यवस्था। इस शोध का महत्व इन कलाओं के संरक्षण और संवर्धन में निहित है, जिससे वे आने वाली पीढ़ियों के लिए सजीव रह सकें।

मुख्य शब्द- लोक कला, शिल्पकला, संस्कृति, कला प्रोत्साहन, उम्मीद, प्रतिस्पर्धा,

विषय प्रवेश- चित्रकूट की लोक कला एवं संस्कृति की चर्चा करते समय इसके ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक महत्व को समझना आवश्यक है। चित्रकूट भारतीय उपमहाद्वीप के प्रमुख धार्मिक और सांस्कृतिक केंद्रों में से एक है, जो अपनी अद्वितीय लोक कला और संस्कृति के लिए जाना जाता है। इस संदर्भ में, निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित किया जा सकता है।

साहित्यिक उल्लेख- चित्रकूट क्षेत्र की लोक कला संस्कृति का अध्ययन करने के लिए, पहले से उपलब्ध साहित्य और अनुसंधानों का उल्लेख महत्वपूर्ण है। इस भाग में चित्रकूट की लोक कलाओं जैसे कि लोक चित्रकला, लोक संगीत, लोक नृत्य और हस्तशिल्प का विवरण और उनके ऐतिहासिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा। यह भी देखा जाएगा कि कैसे इन लोक कलाओं ने क्षेत्रीय संस्कृति को संवारने में योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति में चित्रकूट लोक कला संस्कृति का अद्वितीय स्थान है । यह क्षेत्र अपनी समृद्ध परंपराओं, धार्मिक कथाओं और जीवंत लोक कला के लिए प्रसिद्ध है। साहित्यिक दृष्टिकोण से चित्रकूट की लोक कला में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की कहानियाँ विशेष रूप से प्रचलित हैं। इसके अतिरिक्त यहाँ की लोक कला में स्थानीय देवी-देवताओंप्रकृति और ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं का चित्रण होता है। डॉ. दीक्षित जी ने अपनी रचनाएँ में चित्रकूट की संस्कृति और लोक कला पर व्यापक शोध किया है। डॉ. राधेश्याम शुक्ला की पुस्तक 'चित्रकूट की लोक कला' जिसमें इस क्षेत्र की कला के विभिन्न पहलुओं का विश्लेषण किया गया है। जिसमे चित्रकूट की लोक चित्रकला का विवरण, उनकी शैली और तकनीक और उनके प्रमुख उदाहरणों पर चर्चा है। चित्रकूट के प्रमुख लोक गीत, संगीत वाद्ययंत्र और नृत्य की विधाओं पर चर्चा पर

प्रकाश डालने के साथ ही यहाँ के प्रमुख हस्तशिल्प उनकी निर्माण विधियाँ और उनका आर्थिक महत्व आदि का वर्णन किया गया है।

शोध प्रविधि- इस शोध पत्र में मुख्यतः गुणात्मक शोध विधियों का उपयोग किया जाएगा। इसके अंतर्गत क्षेत्र के कलाकारों, शिल्पियों, और कला संरक्षकों के साथ साक्षात्कार करके जानकारी संग्रह की गई है। इसके साथ ही यहाँ के संग्रहालयों, पुस्तकालयों और अभिलेखागारों में उपलब्ध चित्रकूट की लोक कला से संबंधित दस्तावेजों का अध्ययन करके संग्रहण किया गया है। चित्रकूट क्षेत्र का दौरा कर वहाँ की लोक कला की वर्तमान स्थिति का प्रत्यक्ष आकलन किया गया है।

शोध का महत्त्व - चित्रकूट की लोक कला संस्कृति का अध्ययन करना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह हमारी सांस्कृतिक धरोहर को समझने और संरक्षित करने में मदद करता है। यह अध्ययन लोक कला के उन पहलुओं को उजागर करेगा जो समय के साथ लुप्त हो रहे हैं और उनकेरुद्धार के लिए आवश्यक कदमों की पहचान करेगा। चित्रकूट की लोक कला की विविधता और विशिष्टता का संरक्षण महत्वपूर्ण है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ इस धरोहर से परिचित हो सकें।यहाँ की लोक कला स्थानीय समुदायों के बीच एकता और समन्वय को बढ़ावा देती है। इसके साथ ही लोक कला के संरक्षण और प्रचार से स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों के लिए रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हो सकते हैं।

शोध का उद्देश्य- इस शोध पत्र का उद्देश्य चित्रकूट की लोक कला संस्कृति का व्यापक अध्ययन करना और उल्लिखित बिंदुओं पर ध्यान केंद्रित करना है, १-लोक कला की संरक्षण की रणनीतियों की पहचान और उनका कार्यान्वयन। २-लोक कला के प्रचार और प्रसार के लिए आवश्यक कदम। 3-लोक कला के माध्यम से स्थानीय आर्थिक विकास की संभावनाओं की पहचान।4- नई पीढ़ी को लोक कला की शिक्षा और उससे जुड़ी सांस्कृतिक धरोहर के प्रति जागरूक करना। 5- चित्रकूट की लोक कला की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का अध्ययन करना। 6- वर्तमान में चित्रकूट लोक कला की स्थिति का विश्लेषण करना। 7- चित्रकूट लोक कला के संरक्षण और संवर्धन के लिए संभावित उपाय सुझाना। 8- इस कला के माध्यम से स्थानीय समुदायों के सामाजिक और आर्थिक विकास के लिए रणनीतियाँ विकसित करना। इस शोध पत्र के माध्यम से चित्रकूट की लोक कला संस्कृति की समृद्धि और उसे संरक्षण हेतु की जाने वाली संभावनाओं पर व्यापक दृष्टिकोण प्राप्त होगा। यह न केवल सांस्कृतिक धरोहर को संजोने में मदद करेगा बल्कि नई पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा स्रोत के रूप में भी कार्य करेगा।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

चित्रकूट, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश की सीमा पर स्थित एक ऐतिहासिक और धार्मिक स्थल है। यह स्थान हिंदू धर्म के महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों में से एक है और रामायण काल के घटनाओं से जुड़ा हुआ है। भगवान राम, सीता और लक्ष्मण ने अपने वनवास के 14 वर्षों में से 11 वर्ष यहां व्यतीत किए थे। इस स्थान का वर्णन वाल्मीकि रामायण और तुलसीदास की रामचरितमानस में भी मिलता है, जिससे इसकी धार्मिक और सांस्कृतिक महत्ता स्पष्ट होती है। साथ ही यह स्थान तपस्वियों और साधुओं के तपोभूमि के रूप में भी प्रसिद्ध है। चित्रकूट के धार्मिक स्थलों में कामदगिरि पर्वत, गुप्त गोदावरी, और स्फटिक शिला जैसे धार्मिक स्थलों ने इस क्षेत्र को एक प्रमुख तीर्थ स्थान बना दिया है। इन स्थलों पर आने वाले भक्त और यात्रियों ने यहां की कला और शिल्प को समृद्ध किया है। इस क्षेत्र में विभिन्न राजवंशों का शासन रहा है, जिन्होंने यहां की कला और

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 31-37*

संस्कृति को संरक्षण और प्रोत्साहन दिया। विशेषकर बुंदेलखंड के परमार, हरिहर व् चंदेल राजाओं ने यहां की कला को विशेष बढ़ावा दिया।

भौगोलिक पृष्ठभूमि-

चित्रकूट की भौगोलिक विशेषताएं भी यहां की लोक कला को प्रभावित करती हैं। यह क्षेत्र विंध्य पर्वतमाला के बीच बसा है और यहां की प्राकृतिक सुंदरता ने कला और साहित्य को प्रेरित किया है। पहाड़ों और जंगलों के बीच स्थित चित्रकूट की प्राकृतिक सुंदरता ने यहां के कलाकारों को गहरे रूप से प्रभावित किया है। प्राकृतिक दृश्यावलियों को चित्रित करना यहां की कला का एक प्रमुख हिस्सा है। मंदाकिनी नदी और अन्य जल स्रोतों के किनारे बसे चित्रकूट ने यहां की लोक कला को समृद्ध किया है। जल के निकटता ने यहां के कलाकारों को जल स्रोतों की महत्ता और सुंदरता को अपनी कला में शामिल करने के लिए प्रेरित किया है। चित्रकूट की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है। ग्रामीण जीवन और कृषि कार्य यहां की लोक कला का महत्वपूर्ण हिस्सा है। ग्रामीण जीवन की सादगी और मेहनत को लोक चित्रों और मूर्तियों में विशेष स्थान दिया गया है। चित्रकूट की लोक कला की ऐतिहासिक और भौगोलिक पृष्ठभूमि ने इसे एक विशिष्ट और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर बनाया है। यहां की कला न केवल धार्मिक और ऐतिहासिक घटनाओं को दर्शाती है बल्कि प्राकृतिक सुंदरता और ग्रामीण जीवन की झलक भी प्रस्तुत करती है। चित्रकूट की लोक कला संस्कृति में ऐतिहासिक रूप से धार्मिक और आध्यात्मिक तत्वों का विशेष महत्व रहा है। यहाँ की कला में रामायण और महाभारत की कहानियों का विस्तृत चित्रण मिलता है। इसके अलावा, मुगल और ब्रिटिश काल में भी इस क्षेत्र की कला पर प्रभाव पड़ा, जिससे इसकी शैली में विविधता आई। चित्रकूट का उल्लेख रामायण और महाभारत जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिलता है, जो इसे धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बनाता है।

लोक कलाओ के प्रकार-

चित्रकूट की चित्रकला धार्मिक और पौराणिक कथाओं पर आधारित होती है। यहाँ की चित्रकला में रामायण के दृश्यों और धार्मिक कथा-प्रसंगों को दर्शाया जाता है। चित्रकूट की लोक चित्रकला अपनी विशिष्ट शैली और धार्मिक, सांस्कृतिक, और प्राकृतिक तत्वों के साथ भारतीय लोक कला की एक महत्वपूर्ण शाखा है। इसमें विभिन्न प्रकार की कलाओं को शामिल किया गया है, जैसे कि लोक चित्रकला, भित्ति चित्रण, पोथी चित्रण, और महाबुलिया कला आदि।

चित्रकूट की लोक चित्रकला-

चित्रकूट की लोक चित्रकला में धार्मिक, पौराणिक, और ग्रामीण जीवन की झलक मिलती है। यह कला ग्रामीण समाज में प्रचलित है और इसकी जड़ें स्थानीय संस्कृति और परंपराओं में गहरी हैं। यहाँ की लोक चित्रकला में प्रमुख रूप से रामायण, महाभारत, और अन्य धार्मिक कथाओं का चित्रण किया जाता है।

भित्ति चित्रण- भित्ति चित्रण, चित्रकूट की एक प्रमुख कला शैली है, जिसमें मंदिरों, घरों, और सार्वजनिक स्थलों की दीवारों पर चित्र बनाए जाते हैं। यह चित्रण धार्मिक और सांस्कृतिक घटनाओं को चित्रित करता है। मध्य प्रदेश क्षेत्र स्थित रामघाट पर रत्नेस्वर मंदिर विशेष प्रचलित है जिसके मंडपम में रामायण की सम्पूर्ण चरित्र चित्रण को राजस्थानी शैली में उकेरी गई है इसके अतिरिक्त परिक्रमा मार्ग व् रामघाट के कई मंदिर एवं धर्मशालाओ में चित्रण कार्य किये गए है, वर्तमान में उत्तर प्रदेश एवं मध्य प्रदेश के राजकीय प्रसाशन सुन्दरीकरण अंतर्गत सम्पूर्ण स्थलों पर भित्तिचित्रण का कार्य करा रही है, जिसमे धार्मिक चित्रण, रामायण और

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 31-37*

महाभारत के प्रसंगों का चित्रण प्रमुखता से किया जाता है। एवं प्राकृतिक दृश्य, पहाड़, नदी, और वन्यजीवन के दृश्य प्रमुख होते हैं। यहाँ के ग्रामीण जीवन, त्यौहार, और कृषि कार्यों का चित्रण भी देखने को मिलता है।

पोथी चित्रण-

पोथी चित्रण एक पारंपरिक कला है जिसमें धार्मिक ग्रंथों और कथाओं को चित्रित किया जाता है। यह चित्रण प्राचीन पांडुलिपियों और धार्मिक पुस्तकों में किया जाता है। विशेषताएँ धार्मिक और पौराणिक कथा, रामायण, महाभारत, और अन्य धार्मिक ग्रंथों की कहानियाँ। लघुचित्रण में छोटे आकार के चित्र जो विस्तृत और सूक्ष्म विवरणों के साथ बनाए जाते हैं। इन्हे बनाने में प्राकृतिक रंगों का प्रयोग प्रमुखता से होता है। (नारायण, 2013)

महबुलिया कला-

महबुलिया, सृजन व तकनीक जीवन जीवन यह कला ग्रामीण जन- मध्य उसके आंगन व दिवारों पर बिना किसी आवलम्ब तथा आश्रयदाता के निरन्तर फैलती और आगे बढ़ती चली आ रही है। दशहरा के आगमन का सूचक इस कला का सृजन आश्विन (कुंवार) माह के पितृ पक्ष में सर्वत्र देखा जा सकता है। मूलतः इस कला का सृजन बालिकाओं द्वारा ही किया जाता है। वे समूह में सुबह-सबेरे ही पुष्प संचय करती हैं और सांध्य वेला में इसका निर्माण व सृजन आरंभ होता है। इस कला का सृजन धरातल, फर्श, कटीला पौधा व दिवार आदि पर की जाती है। इसके सृजन से पूर्व निर्माण स्थल को रंग, चूने अथवा गोबर आदि से लीप लिया जाता है। तत्पश्चात् गीले गोबर से ही आकृति को उभार कर उकेरा जाता है। इसके बाद भाँति-भाँति के फूलों के रंग-बिरंगे पंखुडियों को इस पर चिपका कर इसे अन्तिम रुप प्रदान किया जाता है। वाह्य लाल पंखुडियों की श्रृंखला मध्य पीले और उसके बीच भूरे या काले पंखुडियाँ बरबस ही नयनों का रोक लेती हैं। कहीं-कहीं पर पंखुडियों की जगह रंगीन पत्थर, पन्नी, सीप व घोघे भी चिपकाये जाते हैं। आकृति के तैयार हो जाने पर इसकी विधिवत पूजा अर्चना कर आरती उतारी जाती है, तथा भोग प्रसाद बाटे जाते है, अन्तिम दिन इस कला की प्रस्तुति कटीली झाड़ियो और सूखी टहनियों में फूलो की रंगीन पंखुडियो को पिरो कर तैयार की जाती है तदोपरांत गाजे बाजे के साथ पास के नदी या तालाब में विसर्जित करने की परंपरा है। जो दुःख की घड़ी में भी शाँति और प्रसन्नता के भावों को व्यक्त करता है, लोक कला इन आकृतियों के सृजन में मुख्यतः ज्यामितीय आकार का प्रयोग किया जाता है। कही कही पर पशु-पक्षी व् पेड़-पौधों की आकृति के साथ मानव चित्रण का प्रयास दिखता है, टेढ़ी मेढ़ी रेखाए होते हुए भी सम्पूर्ण दृश्य मन को आकृष्ट कर लेती है, कही इसे भाई की लम्बी आयु के लिए बनाया जाता है तो कहीं लड़कियाँ अपने सुयोग्य वर एवं सुखद तथा सम्पन्न ससुराल की अभिलाशा को संजो कर बनाती है, कही कहीं इसे पितृपक्ष में निर्माण का तात्पर्य पूर्वजो को समर्पित तथा प्रेत आत्मा की शांति के लिए किया जाता है। लोक जीवन व् लोक संस्कृति की परिचायक के रूप में अन्य क्षेत्रीय कला की भांति यह कला भी अपनी एक अलग पहचान रखती है।

चित्रकूट की लोक चित्रकला, भित्ति चित्रण, पोथी चित्रण, और महबुलिया कला ने क्षेत्र की सांस्कृतिक धरोहर को संजोकर रखा है। ये कलाएँ न केवल धार्मिक और पौराणिक कथाओं को चित्रित करती हैं, बल्कि ग्रामीण जीवन और प्राकृतिक सौंदर्य को भी दर्शाती हैं। इन कलाओं ने चित्रकूट की संस्कृति को समृद्ध बनाया है और इसे एक विशिष्ट पहचान दी है।

हस्तशिल्प-

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 31-37*

चित्रकूट के हस्तशिल्प में लकड़ी के खिलौने, और सजावटी वस्तुएं महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। लकड़ी के खिलौने चित्रकूट की लोक संस्कृति का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। सीतापुर निवासी गोरेलाल बताते है कि उनके द्वारा निर्मित लकड़ी के खिलौने स्थानीय ही नहीं अपितु अन्य प्रसिद्ध पर्यटक शहरों में भी निर्यात होते है, खिलौनों में सर्वप्रचलित गणेश जी की प्रतिमा है। कुछ खिलौने सादा यूलतः लकड़ी के रंग में रहते है किन्तु कुछ सुन्दर व् आकर्षक बनाने हेतु विभिन्न कच्चे रंगों को लाख में मिलकर लकड़ी पर चढ़ाया जाता है। इन रंगों को लाख चमक एवं पक्का करने का कार्य करता है, ये खिलौने बच्चों के लिए बनाए जाते हैं और उन्हें ग्रामीण क्षेत्रों में पसंद किए जाते हैं। इनमें लकड़ी के खेलने के बनाने के संस्कारी विचार होते हैं जो अपनी रोजमर्रा की जरूरतों को पूरा करने के लिए ऐसे ही वस्तुओं का निर्माण करके जीवन यापन करते हैं। चित्रकूट में सजावटी वस्तुओं का उपयोग भी विशेष रूप से धार्मिक और सामाजिक समारोहों में होता है। ये वस्तुएं आमतौर पर हाथ से बनाई जाती हैं और मंदिरों, गांवों के दीवारों, और सामुदायिक स्थलों में सजावट के रूप में प्रयोग की जाती हैं। इनमें रंगीन धातु, रंग और विभिन्न आकृतियाँ शामिल होती हैं जो स्थानीय संस्कृति को दर्शाती हैं।

मिट्टी के बर्तन-

मिट्टी के बर्तन चित्रकूट की लोक संस्कृति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। ये बर्तन स्थानीय गांवों में हाथ से बनाए जाते हैं और उन्हें पूजा पाठ, उत्सव एवं जल व् सामग्री रखने हेतु और अन्य खाद्य पदार्थों परोसने के लिए उपयोग किया जाता है। इन बर्तनों की खास बात यह है कि वे परंपरागत ढंग से बनाए जाते हैं और उन्हें स्थानीय मिट्टी का प्रयोग करके बनाया जाता है।

चित्रकूट की इन सभी वस्तुओं ने स्थानीय समाज की भविष्य में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को समर्थन मिलता है, बल्कि यह समाज की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान को भी मजबूत करता है। चित्रकूट में लोक संगीत और नृत्य की समृद्ध परंपरा है। यहाँ के भजनों, कीर्तन, और लोकगीतों में धार्मिक और सांस्कृतिक तत्वों का समावेश होता है। यहाँ की संस्कृति में धार्मिक त्यौहारों, मेलों, और उत्सवों का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के प्रमुख त्योहारों में राम नवमी, दीपावली, और मकर संक्रांति के अतिरिक्त प्रत्येक अमावस्या विशेष रूप से शामिल हैं, जो स्थानीय संस्कृति और परंपराओं को जीवित रखते हैं।

चित्रकूट की लोक कलाओ की आशाएँ-

संरक्षण और संवर्धन- चित्रकूट की लोक कला और संस्कृति को संरक्षित करने और उसे भविष्य की पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए सरकार और गैर-सरकारी संगठनों द्वारा प्रयास किए जा रहे हैं। यहाँ कुछ मुख्य पहलू हैं जिन्हें अमल करते हुए प्रयास करना चाहिए -

1. संरक्षण और संग्रहण- स्थानीय सरकारें और सांस्कृतिक संस्थानों ने चित्रकूट में लोक कला के संरक्षण और संग्रहण के लिए विशेष महत्व दिया है। स्थानीय संग्रहालयों और कला संस्थानों में इस कला के प्रतिनिधित्व के लिए विशेष कला मेला और प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाने लगा है।

2. शिक्षा और प्रशिक्षण सरकारी संस्थानों द्वारा लोक कला को बच्चों और युवाओं के बीच प्रचारित करने के लिए विशेष शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना चाहिए। इससे युवा पीढ़ी को अपनी संस्कृति और लोक कला के प्रति उत्साह बढ़ाने में मदद मिलेगी। स्थानीय विद्यालयों और संस्थानों में लोक कला और संस्कृति के महत्व को समझाने के लिए पाठ्यक्रम शामिल किए जाने चाहिए।

डॉ. मन्तोष यादव, चित्रकूट लोक कला संस्कृतिः आशा एवं चुनौतियाँ, कला समीक्षा , खंड 1, *अंक.*1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 31-37*

3. विकास योजनाएं सरकार द्वारा चित्रकूट में लोक कला के विकास को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाएं आयोजित करनी चाहिए। इन योजनाओं के तहत स्थानीय कला व् कलाकारों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उन्हें नई और स्थायी आय उपलब्ध कराने के लिए सहायता प्रदान की जानी चाहिए ।

4. सांस्कृतिक महोत्सव और प्रदर्शनियाँ- चित्रकूट में नियमित रूप से सांस्कृतिक महोत्सव और लोक कला प्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती हैं। इनमें स्थानीय कलाकारों का प्रदर्शन, कार्यशालाएं, और लोक कला की प्रदर्शनी शामिल होनी चाहिए जो समुदाय को सांस्कृतिक रूप से जोड़ती हैं।

5. सहयोगी संगठन- गैर-सरकारी संगठनों ने भी चित्रकूट में लोक कला के प्रचार-प्रसार और संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन संगठनों ने सांस्कृतिक प्रदर्शनियों, कार्यशालाओं, और अन्य कार्यक्रमों का आयोजन किया है जो स्थानीय कलाकारों को नई संभावनाओं के लिए उत्तेजित करते हैं। इन्हे और प्रोत्साहित करते हुए सरकारी आयोजनों से जोड़ना चाहिए ।

6- पर्यटन चित्रकूट की धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को बढ़ावा देने के लिए पर्यटन को बढ़ावा दिया जाना चाहिए, जिससे स्थानीय कलाकारों और शिल्पकारों को रोजगार के अवसर मिल सके।

इन सभी प्रयासों के माध्यम से, चित्रकूट की लोक कला और संस्कृति को संरक्षित रखने और उसे आगामी पीढ़ियों तक पहुँचाने में सकारात्मक प्रगति जरुर मिलेगी।

चित्रकूट की लोक कलाओं की वर्त्तमान चुनौतियाँ

चित्रकूट की लोक कलाओं को बचाने और प्रोत्साहित करने में कई चुनौतियाँ आती हैं। इनमें से कुछ मुख्य चुनौतियाँ निम्नलिखित हैं

आधुनिकता और पश्चिमीकरण- चित्रकूट जैसे गांवीय क्षेत्रों में आधुनिकता और पश्चिमीकरण की चुनौती सबसे बड़ी है। यहां के युवा पीढ़ी को अन्य आधुनिक विकल्पों और मुख्य शहरों में रोजगार के आकर्षण से प्रभावित होने की संभावना होती है, जिससे लोक कला को बचाने में रुचि कम होती है।

आर्थिक समस्याएँ- बढ़ती आर्थिक समस्याएँ भी लोक कलाओं के प्रति रुचि को कम कर सकती हैं। कई कलाकार अपने रोजगार के लिए अन्य क्षेत्रों में मिले अधिक अवसरों के लिए माइग्रेट कर सकते हैं, जिससे इस कला की प्रजनन प्रक्रिया पर असर पड़ता है।

संरक्षण की कमी- लोक कलाओं की संरक्षण की कमी एक अन्य मुख्य चुनौती है। स्थानीय समुदायों के बढ़ते आधुनिक आवासीय विकास के कारण, पारंपरिक ज्ञान और कौशल के प्रति रुचि कम हो रही है, जिससे लोक कलाओं को संजीवित रखने के लिए समुदायों को अधिक सक्रिय रूप से जुटने की आवश्यकता होती है।

इन चुनौतियों का सामना करने के लिए, सरकार, गैर-सरकारी संगठन, और स्थानीय समुदायों को साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता है। सामुदायिक सशक्तिकरण, विशेष शिक्षा कार्यक्रमों का आयोजन, और सांस्कृतिक प्रदर्शनियों को बढ़ावा देने से लोक कलाओं को सुरक्षित रखा जा सकता है और उनका महत्व समझाया जा सकता है।

निष्कर्ष

चित्रकूट की लोक कला एवं संस्कृति एक धरोहर है जिसे संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता है। इसके लिए स्थानीय समुदाय, सरकार, और गैर-सरकारी संगठनों को मिलकर कार्य करना होगा। पारंपरिक कला और संस्कृति का संरक्षण न केवल हमारे अतीत को जीवित रखता है बल्कि भविष्य की पीढ़ियों को भी अपनी जड़ों

से जोड़ता है। उपरोक्त सुझावों को लागू करके चित्रकूट लोक कला संस्कृति को न केवल संरक्षित किया जा सकता है बल्कि इसे नए सिरे से विकसित भी किया जा सकता है, जिससे यह कला की दुनिया में अपना महत्वपूर्ण स्थान बनाए रख सके।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. सिंह, आर. (2012). चित्रकूट लोक संस्कृतिः ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य. सरस्वती प्रकाशन. इलाहाबाद, पृष्ठ संख्या- 310

2. दीक्षित, जी. (2015). चित्रकूट की लोक कलाः एक सांस्कृतिक अध्ययन. आदर्श प्रकाशन. दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 250

3. मिश्रा,एन.(2018). चित्रकूट की भित्ति चित्रण कला. कला अध्ययन प्रकाशन. भोपाल, पृष्ठ संख्या- 220

4. जैन, पी. (2016). लोक कला में चित्रकूट की विशेषताएँ. सांस्कृतिक विमर्श प्रकाशन. जयपुर, पृष्ठ संख्या- 275

5. मिश्रा,एन.(2018). चित्रकूट की भित्ति चित्रण कला. कला अध्ययन प्रकाशन. भोपाल, पृष्ठ संख्या- 220

6. गुप्ता, ए. (2020). चित्रकूट की महबुलिया कलाः एक समीक्षा. समृद्धि प्रकाशन. दिल्ली, पृष्ठ संख्या- 300

7. चतुर्वेदी, के. (2023). चित्रकूट की सांस्कृतिक विविधता और लोक कला परंपरा, विश्व पुस्तकालय, 707 एवेन्यू, ऋषिकेश, पृष्ठ संख्या- 340

8. कुमार,एस. (2014). चित्रकूट हस्तशिल्प- परंपरा और आधुनिकता. संस्कृति प्रकाशन. कानपुर, पृष्ठ संख्या- 260

9. शर्मा, द. (2017). चित्रकूट के मिट्टी के बर्तनः एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण. शिल्प प्रकाशन. देहरादून, पृष्ठ संख्या- 245

10. नारायण, एन. (2013). चित्रकूट लोक कला- परंपरा और विकास. सांस्कृतिक अध्ययन प्रकाशन. बरेली, पृष्ठ संख्या- 235

11. अग्रवाल, एल. (2019). चित्रकूट लोक कला का संरक्षण और भविष्य. लोक संस्कृति प्रकाशन. आगरा, पृष्ठ संख्या- 285

12. अग्रवाल, एल. (2019). चित्रकूट लोक कला का संरक्षण और भविष्य. लोक संस्कृति प्रकाशन. आगरा, पृष्ठ संख्या- 285

अस्सिस्टेंट प्रोफेसर,

ललित कला विभाग, देवभूमि उत्तराखंड विश्वविद्यालय, देहरादून उत्तराखंड

शिवानी शाह, "रंगों से जला दीप"(विंसेंट वैन गॉग को समर्पित), कला समीक्षा, खंड 1, *अंक*.1 (*अप्रैल* 2025), *पृ. 38*

"रंगों से जला दीप"(विंसेंट वैन गॉग को समर्पित)

शिवानी शाह*

वह जो चला अकेला,
पर भीड़ के शोर से ऊँचा।
कपड़े फटे, मन टूटा,
पर सपनों में था सूरज पूरब का।

जिसने अंधेरे से बनाई रौशनी,
और पागलपन से रची अमरता।
हर स्ट्रोक में थी आग कोई,
हर रंग में आत्मा की गति थी।

सूरजमुखी बोले उसकी भाषा,
तारों भरी रातें बनीं गाथा।
उसने जिन्दगी नहीं,
पर हर पल को चित्रित किया
जैसे हर धड़कन एक कविता हो।

लोगों ने कहा, "पागल है यह!"
उसने कहा, "तो क्या?"
अगर पागलपन ही वो पुल है
जो दुनिया को सुंदरता से जोड़ता है–
तो हाँ, मैं पागल हूँ।

थियो को भेजे हर पत्र में
था प्रेम, पीड़ा और कला का इत्र।
उसने देखा उम्मीद को भी
रंगों की धार से पिघलते हुए।

जो न समझे उस समय उसे,
अब उसी के चित्रों में जीवन धड़कता है।

मृत्यु से भी जिसने जीता जीवन–
वह वैन गॉग था, है, रहेगा।

"अगर कभी लगे कि कोई नहीं समझता तुम्हें,
तो याद रखना–विंसेंट भी अकेला था,
पर उसके रंगों ने इतिहास बदल दिया।"